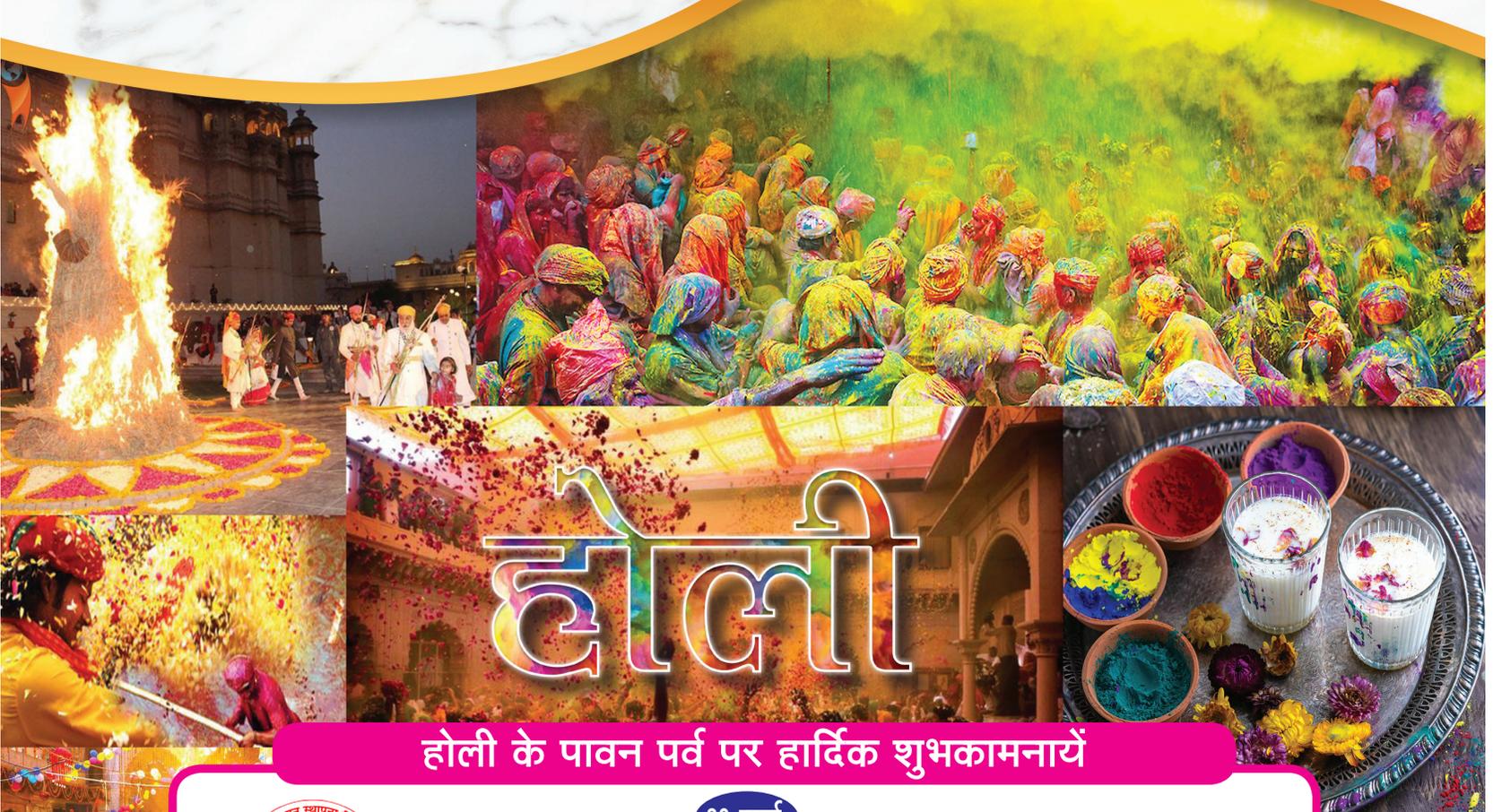


मेरा राजस्थान

वर्ष-१९, अंक- ०१, मुंबई, मार्च २०२४

सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४४ मूल्य -१००.०० रुपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका



होली

होली के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें



30 मार्च

'राजस्थान स्थापना दिवस'

BOLLYWOOD
PARK
FILMCITY MUMBAI

के उपलक्ष पर

30-31 मार्च 2024 को मुंबई की 'फिल्म सिटी' में भव्य 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम का आयोजन राजस्थानी नृत्य, संस्कृति, खान-पान, परिधान के साथ 7 वें वर्ष में प्रवेश के साथ 'श्रीमती व कुमारी राजस्थानी प्रतियोगिता' का आयोजन

पहले आये पहले पायें

आयोजक

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

राष्ट्रीय अध्यक्ष - बिजय कुमार जैन, मो. 9322307908



मे भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को
'भारत'
ही बोला जाए
www.mainbharathn.com

Remove India Name From the Constitution India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

[http:// www.merarajasthan.co.in](http://www.merarajasthan.co.in)

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान





The Backbone of Your Structure



MOIRA means
Double strength for your **Construction**



Available In : Fe 550, Fe 550D, Fe 600 & CRS

**JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.**

106 / 107 / 108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E),
Mumbai - 400 066. Phone : +91 2242032000 Fax : +91 22 42032020
Email : ajay@moiratmt.com | marketing@moiratmt.com

पधारो सा!

मुंबई माय आपणों राजस्थान मेला माय

पधारो सा!



9 वाँ
वर्ष

आपणों राजस्थान



धौरा से ध्रुव की ओर...



30 मार्च 'राजस्थान स्थापना दिवस' पर

30-31 मार्च 2024 दो दिवसीय

भव्यातिभव्य राजस्थान मेला का आयोजन

राजस्थानी संस्कृति, नृत्य, खान-पान, परिधान, लाख की चूड़ी, मेहंदी, कठपुतली आदि-आदि सभी कुछ मुंबई की फिल्म सिटी क माय फिल्म की शूटिंग स्थल देखो, साथ ही शूटिंग होत हुआ भी देखो...

चूक हुयी तो बहुत कुछ खोया

'आपणों राजस्थान' मेला नहीं देख्या तो क्या देख्या

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत अंतर्राष्ट्रीय संस्थान



राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
मो. 9322307908

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्डा, कोलकाता
मो. 9830224300

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
रवि जैन, मुंबई
मो. 8108843571

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 01(919)610-7106

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 044 (770) 3827595

कार्यक्रम संयोजक
अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई
मो. 97022 05252

कार्यक्रम सहसंयोजक
सन्नी मंडावरा, मुंबई
मो. 8080280330

यातायात संयोजक
विमला समदानी, मुंबई
मो. 9324560725

राजस्थानी व्यंजन संयोजक
दिलीप झंवर, मुंबई
मो. 9820075931

सौजन्य : गेल्ड ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन्स



कण-कण से गुंजेगा जय-जय राजस्थान, बढ़ायेगें भारत का गौरव और सम्मान

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

जय महाराष्ट्र!

30-31 मार्च 'मुंबई में राजस्थान' देखें

जय भारत!

यह पत्रक राजस्थानी संस्कृति से भरा है कृपया दूसरे राजस्थानी तक जरूर पहुंचायें

संस्कृति-समाज-राष्ट्र हमारे जीवन की धरोहर है इनकी साज-संभाल जरूरी है



८

आचार्य विद्यासागर महाराज के विचार...



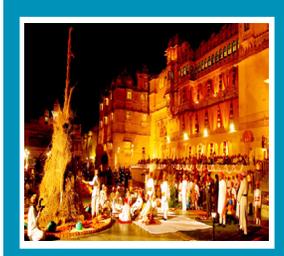
१२

महाशिवरात्रि पर्व



१६

रंगों का त्योहार होली



२०

होलिका दहन



२६

होली पर बनायें विशेष व्यंजन...

मार्च

२०२४

के अंक की

झलकियाँ

और भी बहुत कुछ...

‘मेरा राजस्थान’ अप्रैल २०२४ री विशेषतावां

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस



मार्च २०२४

४

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें! जय भारत!



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए





AGARWAL
GROUP OF
COMPANIES



**YOUR
FUTURE
HOME
AWAITS
YOU**

www.agarwalgroup.net.in

**CALL
900 400 2018**

Studio & 1BHK Flat Available

Address:- Upper Govind Nagar, Panchbavdi, Goregaon East, Mumbai

वर्ष-१९, अंक ०१, मार्च २०२४

१२
अंक
वार्षिक
१२००/-



सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आवाहन करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई
सम्पर्क करें...
सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति



बी-२१०, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - ४०० ०५९.
दूरध्वनि - ०२२-२८५० ९९९९

भ्रमणध्वनि: 9322307908

अणुडाक: mailgaylorgroup@gmail.com
बिजयजैन@मेराभारतहूँ, भारत
अन्तरताना : http://www.merarajasthan.co.in
http://www.bijayjain.com

https://www.facebook.com/merarajasthanpatrika/
https://twitter.com/mera_rajasthan
https://www.instagram.com/merarajasthan01/

कृपया विज्ञापन बिल, सदस्यता शुल्क के साथ सहयोग राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.

in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908 UPI No.

सम्पादकीय

मेरे गुरु संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के मोक्षगमन ने होली के त्यौहार को गमगीन कर दिया

१८ फरवरी २०२४ की काली रात ने मेरे गुरु संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी को मौत की आगोश में ले लिया, कभी सोचा भी नहीं था कि मुझे भविष्य की राह बताने वाले, हर समय मुझे प्रेरणा देने वाले आचार्य श्री विद्यासागर जी अब मेरे पास यानी इस दुनिया में नहीं रहेंगे, कहते हैं जब-जब जो होना है तब तब सो-सो होता है। आचार्य श्री तो नहीं रहे लेकिन उनके निर्देश, उनका आदेश 'भारत की अपनी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए' और 'भारत को 'भारत' भी कहा जाना चाहिए।

मैं आचार्य श्री के चरणों में प्रण लेता हूँ कि जब तक देश की राष्ट्रभाषा हिंदी नहीं बनेगी और विश्व के मानचित्र यानी GLOBE में INDIA की जगह BHARAT नहीं लिखा जाएगा मैं चैन से नहीं बैठूंगा।

होली का त्यौहार, रंगों का त्यौहार, अंधकार से उजाले की ओर बढ़ने का त्यौहार, हम सभी भारतवासी इस वर्ष २४ मार्च को मनाने जा रहे हैं। होली का पावन पर्व दुश्मनी को मिटाकर मित्रता की ओर बढ़ने का अवसर देता है, हम सब अपने दिल की कठोरता को मिटाकर प्यार की भावना विश्व में फैलाएँ, अपने इर्द-गिर्द रहने वाले को बताएँ कि हम सभी भारतीय प्रेम की पुजारी हैं।

'भारत' का एक राज्य 'राजस्थान' की स्थापना ३० मार्च १९४९ को हुई थी। राजस्थान के विभिन्न शहरों व नगरों को मिलाकर 'राजस्थान' बना और आज राजस्थान पूरे विश्व में अपनी शौर्यता की गाथा बता रहा है, इसी संदर्भ में 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा आयोजित 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम ७ वें वर्ष के प्रवेश के साथ भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में स्थापित फिल्म सिटी में भव्यातिभव्य रूप में मनाने जा रहा है, इस बार फिल्म सिटी में करने का मानस इसलिए बनाया गया की फिल्मकारों के द्वारा हम पूरे देश-विदेश में भारतीयों तक यह समाचार पहुंचाएँ कि हमारे देश का नाम 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए। मैं निवेदन करूंगा 'भारत' के विभिन्न राज्यों में रहने वाले राजस्थानी भाई व बहनों से, विशेषकर युवाओं से की इस बार का आयोजित राजस्थानी मेला ३० और ३१ मार्च २०२४ को मुंबई की फिल्म सिटी में देखने जरूर पधारे।

ना देखा यदि राजस्थानी मेला, तो रह जाएंगे दुनिया में अकेला

जय जय राजस्थान!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा



आपका अपना

- बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए का
आवाहन करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

मार्च २०२४

६

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए



भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार होली पर हार्दिक शुभकामनाएं

JRL
Creating Wealth Preserving Values

JRL
MONEY
We Understand only MONEY

J.R.Laddha Financial Services Pvt. Ltd.



Sri Arun Laddha

Director



Sri Jodh Raj Laddha

Chairman



Sri Manoj Laddha

Co-Founder & CEO

Corporate Finance

Investment Banking

Wealth Management

CORP. OFFICE

7th Floor B Wing. Trade World,
Kamala Mills Compound, SB Marg,
Lower Parel, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400013
Ph. No. : 022 - 6196 9000
e-mail : infomumbai@jrladdha.in

REGD. OFFICE

8th Floor, Everest House, 46C, J L Nehru Road,
Kolkata, West Bengal, Bharat- 700071
Ph. No. : 033-22882990
e-mail : info@jrladdha.in



www.jrladdha.in



www.jrlmoney.com

आचार्य विद्यासागर महाराज के विचार हमेशा लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शक साबित होंगे



भारत की भारत ही बोलें इंडिया नहीं

चंद्रगिरी-डोंगरगढ़: दिगम्बर समुदाय के जैन आचार्य १०८ श्री विद्यासागर महाराज के समाधि लेने पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ भारत के कई राजनितिज्ञों, वरिष्ठ समाज सेवियों के साथ महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस ने भी शोक जताया है, सभी ने अपने संदेश में कहा कि आचार्य विद्यासागरजी महाराज जी का जीवन ज्ञान प्राप्ति, कठोर तपस्या और आत्म-कल्याण के लिए समर्पित था। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के प्रकांड विद्वान विद्यासागर जी महाराज ने जीवन भर उपदेशों, लेखों और कविताओं के माध्यम



विश्व में भारत को सम्मान दिला रहे हैं आप नरेंद्र मोदी जी

से जनता को प्रबुद्ध किया और उन्हें आत्म-सुधार का मार्ग दिखाया, एक महान राष्ट्रीय संत और समाज सुधारक का गोलोक गमन हो गया, उनके विचार हमेशा लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शक साबित होंगे। हम सभी जैन आचार्य के समाधि लेने पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आचार्य श्री के समाधि लेने का समाचार फैलते ही भारत भर के दिगम्बर जैन समाज के श्रद्धालुओं और भक्तों में शोक व्याप्त हो गया। श्रावक श्रेष्ठि अशोक पाटनी किशनगढ़, प्रभात जैन मुंबई, राजा भैया सूरत, अतुल सराफ पूना, विनोद बड़जात्या रायपुर, प्रमोद जैन 'कोयला' भोपाल, चंद्रगिरी तीर्थक्षेत्र



विजय कुमार भारत की एक राष्ट्रभाषा हो हिंदी

कमेटी से किशोर जैन, चंद्रकांत जैन, सुधीर जैन आदि ने अपनी विनयांजली व्यक्त की है।

चलते-फिरते संत... ५६ साल में

१.२५ लाख किमी से अधिक चले आचार्यश्री

आचार्यश्री विद्यासागर जी ने १९६८ में दीक्षा ली, इसके बाद १.२५ लाख किलोमीटर से भी ज्यादा पैदल चले, ऐसे में देखा जाए तो आचार्य श्री हर रोज औसतन ६.११ किलोमीटर पैदल चले, इस जानकारी की पुष्टि अचित सागर महाराजजी ने की, इस संबंध में जब हमने मेडिसिन स्पेशलिस्ट डॉ. योगेंद्र श्रीवास्तव के अनुसार आचार्य श्री नियमों का पालन करने वाले थे, उनका खानपान बेहद सीमित था, वे तेल, चीनी और नमक तक का सेवन नहीं करते थे, ऐसे में उनका स्वास्थ्य अच्छा था, जैसे आचार-विचार और नियम-संयम होता है, वैसा ही शरीर भी ढल जाता है, वैसे भी रोज पैदल चलने से आपकी क्षमता में बढ़ोतरी होती है, जैसे कोई व्यक्ति पहले एक दिन में पांच किलोमीटर ही पैदल चलकर थक जाता है, लेकिन वह रोज पांच किलोमीटर पैदल चले तो धीरे-धीरे उसकी पैदल चलने की क्षमता बढ़ती जाती है, चूंकि आचार्यश्री सालों से पैदल विहार करते रहे, निश्चित ही इससे उनके पैदल चलने की क्षमता में बढ़ोतरी हुई होगी।

आचार्यश्री के मुंह से निकला ॐ

सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में लीन हो गए

१७ फरवरी रात २:३५ बजे आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरी तीर्थ क्षेत्र में महासमाधि में प्रवेश करने से पहले सिर्फ 'ॐ' शब्द कहा, सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में ॐ शब्द के साथ लीन हो गए। महासमाधि के पहले आचार्यश्री को भी इस बात का अहसास हो गया था कि इस भूमंडल में उनका समय पूरा हो गया है, एक दिन सबको यहां से खाना होना ही है, इसलिए वे हमेशा जैन श्रावकों को कहते थे भगवान का नाम लेते रहो। मृत्यु को मोक्ष उत्सव के रूप में मनाना चाहिए, उन्होंने आखिरी समय में कहा कि उनके गुरु इंतजार कर रहे हैं, उनके पास जाने का समय आ गया है। महासमाधि के साक्षी श्रावक श्रेष्ठि अशोक पाटनी मदनगंज-किशनगढ़, प्रभात जैन मुंबई आदि हजारों की संख्या में श्रावकगण उपस्थित थे।

देश में... चौका नहीं लगा, जैन संतों ने रखा शेष पृष्ठ ९ पर...

मार्च २०२४

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए



पृष्ठ ८ से... निर्जला उपवास

आचार्यश्री की महासमाधि के अवसर पर पूरे देश में जहां जैन प्रतिष्ठान बंद रहे, वहीं पूरे देश में विहार कर रहे मुनिश्री सहित सभी जैन संतों ने निर्जला उपवास रखा। बच्चों ने एकासन व्रत किया। कई जैन साधकों के घरों में चूल्हा नहीं जला, इसके अलावा टीवी पर ही कई लोग आचार्यश्री का अंतिम संस्कार देखते रहे, इस दौरान मप्र., राजस्थान से कई लोग डोंगरगढ़ के लिए भी रवाना हो गए, भक्तों की आंखों में आंसू नहीं थम रहे थे।

कविता का शौक... कुछ सालों से जापानी कविता लिख रहे थे

आचार्यश्री पिछले कुछ सालों से जापानी हायकू (कविता) लिख रहे थे। हायकू जापानी छंद की कविता होती है, जिसमें पहली पंक्ति में ५ अक्षर, दूसरी में ७ और तीसरी में ५ अक्षर होते हैं, संक्षेप में सारगर्भित बहु अर्थ को प्रकट करने वाली होती है। आचार्यश्री ने ६०० से ज्यादा हायकू लिखे हैं। आचार्यश्री की ज्योतिष, दर्शन और आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी काफी रुचि थी। आचार्य श्री के जीवन की एकमात्र इच्छा रही कि भारत की एक राष्ट्रभाषा 'हिंदी' बने, साथ ही 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, आचार्य श्री की यह इच्छापूर्ति को पूर्ण करने का प्रण आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य वरिष्ठ पत्रकार व संपादक बिजय कुमार जैन ने संकल्प के साथ लिया है।

भारतीय संस्कृति का पावन पर्व होली पर हार्दिक शुभकामनाएं



D.K. Jalan

Mob: 9437043544 / 9337278144

BOSCH

Rakesh Kumar

Mob: 9938415575 / 7008165392

KONARK ELECTRICALS & HARDWARES

Delas in: Welding, Accesories, Electricals Goods, Safety Products, Cutting Tools, Machineris Item

Auth. Dealer: BOSCH Power Tools, JK Files (I) Ltd., Polymark Tools, HPL (I) Ltd., Jhalani Tools (I) Ltd., Alkoplus, Karam Safety Products

AT/P.O. Banarpal, Opp. Indian Petrol Pump, Angul, Odisha, Bharat - 759128

Email: konarkelectrical01@gmail.com

होली के इस त्यौहार में छिपा है मिठास,
रंग और गुलाल में छिपा हैं ढेर सारा प्यार
होली की हार्दिक शुभकामनायें

Anil Agarwal

अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन पाइकमाल

Mob: 9583353435

Lala Kirana Store, Post Paikmal,
Bargarh, Odisha, Bharat - 768039

**भारतीय संस्कृति का पावन पर्व होली पर
हार्दिक शुभकामनाएं**



Deepak Agrawal

Mob: 9437047616 / 7008307070

**Agrawal
Jewellers**



916 (Hm) Gold & Silver Showroom



Hospital Road, Sundargarh, Odisha, Bharat - 770001



भारतीय संस्कृति का पावन पर्व होली पर हार्दिक शुभकामनाएं

Ram Narayan Khemka

Mob.:- 93048 08748 (Begusarai)

99247 59914 (Surat)

Anuश्री
SAREES

AN ISO 9001: 2001 COMPANY

SAREES ANUSHREE SAREES PVT. LTD.

Jasleen Fashion (A Unit of ASPL)

Lucky Woman (A Unit of ASPL)

Off. :- B- 1170, Near Lift No. 14, Ground Floor, Raghukul Market,
Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002

Ph. : 0261-2343107, 2369281, 3201507, 3240507

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पनवेल में युगप्रधान आचार्य महाश्रमण जी का मंगल भावना समारोह सम्पन्न



नौ माह का ऐतिहासिक मंगल प्रवास संपन्न कर मुंबई महानगर से विदा ली अणुव्रत अनुशास्ता, २७४ दिन में ६४८ किलोमीटर की पदयात्रा, ५५ से अधिक उपनगरों में राष्ट्रसंत ने किया प्रवास

मुंबई: अणुव्रत अनुशास्ता नौ माह का प्रवास संपन्न कर मुंबई महानगर से विदा ली। राष्ट्रसंत ने २७४ दिन में ६४८ किलोमीटर से अधिक पदयात्रा की और ५५ से अधिक उपनगरों में प्रवास किया। आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने २५० साधु-साधवियों के साथ मुंबई महानगर को लगभग नौ माह का प्रवास प्रदान किया। २८ मई २०२३ को आचार्यश्री ने घोलवड़ से महाराष्ट्र में प्रवेश किया था, २५ फरवरी २०२४ को पनवेल में मुंबई स्तरीय मंगल भावना समारोह आयोजित थी। मुंबई महानगर इकलौता क्षेत्र है, जहां आचार्य श्री ने इतना सुदीर्घ प्रवास किया, एक ओर जहां घोडबंदर रोड, नंदनवन में ऐतिहासिक चातुर्मास का समायोजन हुआ, वहीं नवी मुंबई वाशी में हाल ही में १६० वां मर्यादा महोत्सव भी मनाया गया।

नेस्को के विशाल भव्य नागरिक अभिनंदन समारोह से शुरू हुई इस यात्रा में पदयात्रा करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने मुंबई, नवी मुंबई के ५५ से भी अधिक

उपनगरों का स्पर्श किया और अपने प्रवचनों द्वारा हजारों श्रद्धालुओं को सन्मार्ग पर चलने की राह दिखाई। आचार्य श्री के प्रवास के दौरान बड़ी संख्या में भक्तों ने उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

युगप्रधान का मुंबई प्रवास

● आचार्य श्री महाश्रमण का बृहत्तर मुंबई में २४२ दिन का प्रवास रहा, इस दौरान ५५ से अधिक उपनगरों में आचार्यश्री ने प्रवास किया।



● आचार्य श्री ने घोलवड़ से विरार १०३ किमी एवं मुंबई महानगर में ५४५ किमी से अधिक की पदयात्रा की।

● एलिवेट के अभियान के साथ इग्स फी कैपेन के जरिए मुंबई पुलिस के साथ मिल ६० से अधिक स्कूल, कॉलेजों में सेमिनार एवं हजारों युवाओं द्वारा नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

● आचार्य श्री के सानिध्य में चार जैन दीक्षा समारोह का आयोजन हुआ।

● तेरापंथ धर्म संघ के इतिहास में प्रथम बार २१ रंगी तपस्या मुंबई में हुई थी, आचार्यश्री ने आह्वान से हजारों की संख्या में श्रावक समाज ने भाग लिया।

● प्रवास में रिकॉर्ड १२२ से अधिक मासखमण हुए, सर्वाधिक २३ मासखमण तप के पारणे हुए।

● ९२, ७२, ५१ दिन की तपस्या श्रावक वर्ग द्वारा की गई, सैंकड़ों अट्टाई तप हुए।

● चातुर्मास में प्रथम बार आचार्य महाश्रमण कीर्तिगाथा जैसे अत्याधुनिक टेक्नोलोजी युक्त म्यूजियम का प्रदर्शन हुआ।

● तेरापंथ विश्व भारती जैसी महत्वाकांक्षी परियोजना की प्रथम कड़ी के रूप में नवनिर्माण की मुंबई महानगर में शुरुआत हुयी।

हर क्षेत्र के दिग्गज पहुंचे आशीर्वाद लेने

मुंबई प्रवास के दौरान आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत, राज्यपाल रमेश बैस, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस सहित अनेकों राजनीतिक हस्तियों के साथ-साथ फिल्मी जगत से जुड़े दिग्गजों ने आचार्य श्री का आशीर्वाद प्राप्त किया। वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, 'जैन एकता' अभियान के प्रवर्तक, 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के उद्घोषक, राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलाने के लिए उत्प्रेरक, 'नीम लगाओ-पर्यावरण बचाओ' का आह्वान करने वाले 'हिंदी' सेवी बिजय कुमार जैन ने भी गुरुदेव महाश्रमण जी का नंदनवन जा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। न्यायपालिका, सामाजिक, व्यापार, चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय के सैंकड़ों प्रतिनिधि युगप्रधान के सनिधि में पहुंचे।



Veda5

Wellness Resorts

for bookings, contact

+91-9354483728

info@vedafive.com

www.vedafive.com



मार्च २०२४

१०

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए



॥ JAI SHRI KRISHNA ॥



RASHMI ENTERPRISES

“Excellence is not an act, but a habit”

Authorized Distributor's

West Coast Paper Mills Ltd., Kolkata

Kuantum Paper Ltd., Chandigarh

Satia Industries Ltd., Delhi

DSG Papers Pvt. Ltd., Patiala

K R Pulp & Papers Ltd., Delhi

4546/I-2/16, 3rd Floor, Ansari Road

Darya ganj ,New Delhi – 110002

Near Kastle Guest House, Opp. Happy Public School

Tel: +91-11-43503793, 41614583 , +91- 99997 25001

Email: bahety2@gmail.com

Courtesy

Vinod Bahety

PH:+91 98100 26840



हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार भगवान शिव का प्रमुख पर्व फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को 'शिवरात्रि' पर्व मनाया जाता है, माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि को भगवान् शंकर का ब्रह्मा से रूद्र के रूप में अवतरण हुआ। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते हैं, इसीलिए इसे 'महाशिवरात्रि' अथवा कालरात्रि कहा गया है, तीनों भुवनों की अपार सुंदरी तथा शीलवती गौरी को अर्धांगिनी बनाने वाले शिव प्रेतों व पिशाचों से घिरे रहते हैं, उनका रूप बड़ा अजीब होता है, शरीर पर मसानों की भस्म, गले में सर्पों का हार, कंठ में विष, जटाओं में जगत-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयकर ज्वाला, बैल को वाहन के रूप में स्वीकार करने वाले शिव अमंगल रूप होने पर भी भक्तों का मंगल करते हैं और श्री-संपत्ति प्रदान करते हैं।

विधान

इस दिन शिवभक्त शिवमंदिरों में जाकर शिवलिंग पर बेल-पत्र आदि चढ़ाते हैं, पूजन व उपवास करते हुए रात्रि को जागरण करते हैं। शिवलिंग पर बेल-पत्र चढ़ाना, उपवास तथा रात्रि जागरण करना एक विशेष कर्म की ओर इशारा करता है, इस दिन शिव जी की शादी हुई थी इसलिए रात्रि में शिवजी की बारात निकाली जाती है। वास्तव में शिवरात्रि का परम पर्व स्वयं परमपिता परमात्मा ही ज्ञानसागर है जो मानव मात्र को सत्यज्ञान द्वारा अन्धकार से प्रकाश की ओर अथवा असत्य से सत्य की ओर ले जाते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, स्त्री-पुरुष, बालक, युवा और वृद्ध सभी इस व्रत को कर सकते हैं, इस व्रत के विधान में सवेरे स्नानादि से निवृत्त होकर उपवास रखा जाता है, इस दिन मिट्टी के बर्तन में पानी भरकर, ऊपर से बेलपत्र, आक धतुरे के पुष्प, चावल आदि डालकर 'शिवलिंग' पर चढ़ाया जाता है, अगर पास में शिवालय न हो तो शुद्ध गीली मिट्टी से ही शिवलिंग बनाकर उसे पूजने का विधान है। रात्रि को जागरण करके शिवपुराण का पाठ सुनना हरेक व्रती का धर्म माना गया है, अगले दिन सवेरे जौ, तिल, खीर और बेलपत्र का हवन करके व्रत समाप्त किया जाता है, महाशिवरात्रि भगवान शंकर का सबसे पवित्र दिन है, यह अपनी आत्मा को पुनीत करने का महाव्रत है, इसके करने से सब पापों का नाश हो जाता है। हिंसक प्रवृत्ति बदल जाती है, निरीह जीवों के प्रति दया भाव उपज जाता है, ईशान संहिता में इसकी महत्ता का उल्लेख इस प्रकार किया गया है-

महाशिवरात्रि पर्व हर हर महादेव

शिवरात्रि व्रतं नाम सर्वपापं प्रणाशनम्
आचाण्डाल मनुष्याणं भुक्ति मुक्ति प्रदायकं

चतुर्दशी तिथि के स्वामी शिव हैं, अतः ज्योतिष शास्त्रों में इसे परम शुभफलदायी कहा गया है, वैसे तो शिवरात्रि हर महीने में आती है, परंतु फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को ही महाशिवरात्रि कहा गया है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार सूर्य देव भी इस समय तक उत्तरायण में आ चुके होते हैं तथा ऋतु परिवर्तन का यह समय अत्यन्त शुभ कहा गया है, शिव का अर्थ है कल्याण, शिव सबका कल्याण करने वाले हैं, अतः महाशिवरात्रि पर सरल उपाय करने से ही इच्छित सुख की प्राप्ति होती है।

ज्योतिषीय गणित के अनुसार, चतुर्दशी तिथि को चंद्रमा अपनी क्षीणस्थ अवस्था में पहुंच जाते हैं, जिस कारण बलहीन चंद्रमा सृष्टि को ऊर्जा देने में असमर्थ हो जाते हैं। चंद्रमा का सीधा संबंध मन से कहा गया है, मन कमजोर होने पर भौतिक संताप प्राणी को घेर लेते हैं तथा विषाद की स्थिति उत्पन्न होती है, इससे कष्टों का सामना करना पड़ता है।

चंद्रमा शिव के मस्तक पर सुशोभित हैं, अतः प्रायः ज्योतिषी शिवरात्रि को शिव आराधना कर कष्टों से मुक्ति पाने का सुझाव देते हैं। शिव आदि-अनादि है, सृष्टि के विनाश व पुनःस्थापना के बीच की कड़ी है, प्रलय यानी कष्ट, पुनः स्थापना यानी सुख, अतः ज्योतिष में शिव को सुखों का आधार मान कर महाशिवरात्रि पर अनेक प्रकार के अनुष्ठान करने की महत्ता कही गई है।

अनुष्ठान कारोबार वृद्धि के लिए : महाशिवरात्रि के सिद्ध मुहूर्त में शिवलिंग को प्राण प्रतिष्ठित करवाकर स्थापित करने से व्यवसाय में वृद्धि व नौकरी में तरक्की मिलती है।

बाधा नाश के लिए : शिवरात्रि के प्रदोष काल में स्फटिक शिवलिंग को शुद्ध गंगा, जल, दूध, दही, घी, शहद व शक्कर से स्नान करवाकर धूप-दीप जलाकर निम्न मंत्र का जाप करने से समस्त बाधाओं का शमन होता है।

ऊँ तुत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्

बीमारी से छुटकारे के लिए : शिव मंदिर में लिंग पूजन कर दस हजार मंत्रों का जाप करने से प्राण रक्षा होती है, महामृत्युंजय मंत्र का जाप रूद्राक्ष की माला से करें।

शत्रु नाश के लिए : शिवरात्रि को एक रूद्राष्टक का पाठ यथासंभव करने से शत्रुओं से मुक्ति मिलती है, मुकदमे में जीत व समस्त सुखों की प्राप्ति होती है।

मोक्ष के लिए : शिवरात्रि को एकमुखी रूद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करवाकर धूप-दीप दिखा कर तख्ते पर स्वच्छ कपड़ा बिछाकर स्थापित करें, शिव रूप रूद्राक्ष के सामने बैठकर सवा लाख मंत्र जप का संकल्प लेकर जाप आरंभ करें, जप शिवरात्रि के बाद भी जारी रखें:

ऊँ नमः शिवाय : रूद्राभिशेक से लाभ यदि चाहते हैं तो जल से रूद्राभिशेक करें व्याधि नाश के लिये कुशा से करें यदि पशुओं की कामना चाहते हैं तो दही से रूद्राभिशेक करें, स्त्री की कामना चाहते हैं तो गन्ना के रस से रूद्राभिशेक करें।

अभिशेक : भगवान शिव का अभिशेक अनेकों प्रकार से किया जाता है, जलाभिशेक: जल से और दुग्धाभिशेक: दूध से

शेष पृष्ठ १४ पर...





NAKODA

NOURISH

nakodagheetel



FRESHLY PRESSED COLD PRESSED OILS



Minimal Heating



No Chemicals



Manual Filtration



100% Natural

From the house of



Pure Ghee, Edible Oils & More...

BOOK YOUR ORDER NOW

8928882457 / 8591562269 / 8928586181 / 9137756585

www.nakodagheetel.com info@gheetel.com



Lic. No: 10017022005931



An ISO 22000: 2018 & HACCP Certified Company

महाशिवरात्रि त्योहार की व्रत-कथा

महाशिवरात्रि हिन्दुओं के सबसे बड़े पर्वों में से एक है, दक्षिण भारतीय पंचांग (अमावस्यान्त पंचांग) के अनुसार माघ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को यह पर्व मनाया जाता है, वहीं उत्तर भारतीय पंचांग (पूर्णिमान्त पंचांग) के मुताबिक फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का आयोजन होता है। पूर्णिमान्त व अमावस्यान्त दोनों ही पंचांगों के अनुसार महाशिवरात्रि एक ही दिन पड़ती है, इसलिए अंग्रेज़ी कैलेंडर के हिसाब से पर्व की तारीख वही रहती है, इस दिन शिव-भक्त मंदिरों में शिवलिंग पर बेल-पत्र आदि चढ़ाकर पूजा, व्रत तथा रात्रि-जागरण करते हैं।

महाशिवरात्रि व्रत का शास्त्रोक्त नियम : महाशिवरात्रि व्रत कब मनाया जाए, इसके लिए शास्त्रों के अनुसार निम्न नियम तय किए गए हैं -

1. चतुर्दशी पहले ही दिन निशीथव्यापिनी हो, तो उसी दिन महाशिवरात्रि मनाते हैं, रात्रि का आठवाँ मुहूर्त निशीथ काल कहलाता है। सरल शब्दों में कहें तो जब चतुर्दशी तिथि शुरू हो और रात का आठवाँ मुहूर्त चतुर्दशी तिथि में ही पड़ रहा हो, तो उसी दिन शिवरात्रि मनानी चाहिए।
2. चतुर्दशी दूसरे दिन निशीथकाल के पहले हिस्से को छुएँ और पहले दिन पूरे निशीथ को व्याप्त करें, तो पहले दिन ही महाशिवरात्रि का आयोजन किया जाता है।
3. उपर्युक्त दो स्थितियों को छोड़कर बाकी हर स्थिति में व्रत अगले दिन ही किया जाता है।

शिवरात्रि व्रत की पूजा-विधि :

1. मिट्टी के लोटे में पानी या दूध भरकर, ऊपर से बेलपत्र, आक-धतूरे के फूल, चावल आदि डालकर 'शिवलिंग' पर चढ़ाना चाहिए, अगर आस-पास कोई शिव मंदिर नहीं है, तो घर में ही मिट्टी का शिवलिंग बनाकर उनका पूजन किया जाना चाहिए।
2. शिव पुराण का पाठ और महामृत्युंजय मंत्र या शिव के पंचाक्षर मंत्र ॐ नमः शिवाय का जाप इस दिन करना चाहिए, साथ ही महाशिवरात्री के दिन रात्रि जागरण का भी विधान है।
3. शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार शिवरात्रि का पूजन 'निशीथ काल' में करना सर्वश्रेष्ठ रहता है, हालाँकि भक्त रात्रि के चारों प्रहरों में से अपनी सुविधानुसार यह पूजन कर सकते हैं।

पृष्ठ १२ से... आयोजन अनुष्ठान मेला : महाशिवरात्रि के अवसर पर काठमांडू के पशुपतिनाथ के मन्दिर पर भक्तजन की भीड़ लगती है, इस अवसर पर भारत व विश्व के विभिन्न स्थानों से जोगी, योगी एवम् भक्तजन इस मन्दिर पर पधारते हैं।

ज्योतिर्लिंग : बारह स्थानों पर बारह ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं, जानिए शिव के 12 ज्योतिर्लिंग के बारे में :

1. सोमनाथ यह शिवलिंग गुजरात के काठियावाड़ में स्थापित हैं।
2. श्री शैल मल्लिकार्जुन मद्रास में /कृष्णा /नदी के किनारे पर्वत पर स्थापित है।
3. महाकाल उज्जैन के अवंति नगर में स्थापित महाकालेश्वर शिवलिंग, जहां शिवजी ने दैत्यों का नाश किया था।
4. ओंकारेश्वर ममलेश्वर मध्यप्रदेश के धार्मिक स्थल ओंकारेश्वर में नर्मदा तट पर पर्वतराज विंध्य की कठोर तपस्या से खुश होकर वरदान देते हुए यहां प्रकट हुए थे शिवजी, जहां ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई।

ज्योतिष के दृष्टिकोण से शिवरात्रि पर्व : चतुर्दशी तिथि के स्वामी भगवान भोलेनाथ अर्थात स्वयं शिव ही हैं, इसलिए प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मासिक शिवरात्रि के तौर पर मनाया जाता है, ज्योतिष शास्त्रों में इस तिथि को अत्यंत शुभ बताया गया है, गणित ज्योतिष के आंकलन के हिसाब से महाशिवरात्रि के समय सूर्य उत्तरायण हो चुके होते हैं और ऋतु-परिवर्तन भी चल रहा होता है। ज्योतिष के अनुसार चतुर्दशी तिथि को चंद्रमा अपनी कमज़ोर स्थिति में आ जाते हैं, चन्द्रमा को शिव जी ने मस्तक पर धारण किया हुआ है - अतः शिवजी के पूजन से व्यक्ति का चंद्र सबल होता है, जो मन का कारक है, दूसरे शब्दों में कहें तो शिव की आराधना इच्छा-शक्ति को मज़बूत करती है और अन्तःकरण में अदम्य साहस व दृढ़ता का संचार करती है।

महाशिवरात्रि की पौराणिक कथा : शिवरात्रि को लेकर बहुत सारी कथाएँ प्रचलित हैं, विवरण मिलता है कि भगवती पार्वती ने शिव को पति के रूप में पाने के लिए घनघोर तपस्या की थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार इसके फलस्वरूप फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था, यही कारण है कि महाशिवरात्रि को अत्यन्त महत्वपूर्ण और पवित्र माना जाता है। वहीं गरुड़ पुराण में इस दिन के महत्व को लेकर एक अन्य कथा कही गई है, जिसके अनुसार इस दिन एक निषादराज अपने कुत्ते के साथ शिकार खेलने गया किन्तु उसे कोई शिकार नहीं मिला, वह थक कर भूख-प्यास से परेशान हो एक तालाब के किनारे गया, जहाँ बिल्व वृक्ष के नीचे शिवलिंग था, अपने शरीर को आराम देने के लिए उसने कुछ बिल्व-पत्र तोड़े, जो शिवलिंग पर भी गिर गए। अपने पैरों को साफ़ करने के लिए उसने उन पर तालाब का जल छिड़का, जिसकी कुछ बून्दें शिवलिंग पर भी जा गिरी, ऐसा करते समय उसका एक तीर नीचे गिर गया, जिसे उठाने के लिए वह शिवलिंग के सामने नीचे को झुका, इस तरह शिवरात्रि के दिन शिव-पूजन की पूरी प्रक्रिया उसने अनजाने में ही पूरी कर ली। मृत्यु के बाद जब यमदूत उसे लेने आए, तो शिव के गणों ने उसकी रक्षा की और उन्हें भगा दिया, जब अज्ञानतावश महाशिवरात्रि के दिन भगवान शंकर की पूजा का इतना अद्भुत फल है, तो समझ-बूझ कर देवाधिदेव महादेव का पूजन कितना अधिक फलदायी होगा।

- मेरा राजस्थान

5. नागेश्वर गुजरात के द्वारकाधाम के निकट स्थापित है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग
6. बैजनाथ बिहार के बैद्यनाथ धाम में स्थापित शिवलिंग
7. भीमशंकर महाराष्ट्र की भीमा नदी के किनारे स्थापित भीमशंकर ज्योतिर्लिंग
8. त्र्यम्बकेश्वर नासिक (महाराष्ट्र) से 25 किलोमीटर दूर त्र्यम्बकेश्वर में स्थापित ज्योतिर्लिंग
9. घुमेश्वर महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में एलोरा गुफा के समीप वेसल गांव में स्थापित घुमेश्वर ज्योतिर्लिंग
10. केदारनाथ हिमालय का दुर्गम केदारनाथ ज्योतिर्लिंग, हरिद्वार से 150 मिल दूरी पर स्थित है।
11. विश्वनाथ बनारस के काशी विश्वनाथ मंदिर में स्थापित विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग
12. रामेश्वरम् त्रिचनापल्ली (मद्रास) समुद्र तट पर भगवान श्रीराम द्वारा स्थापित रामेश्वरम् ज्योतिर्लिंग



केसरिया
ठाण्डै
एवं ड्राई फ्रूट शरबत



Swad bhi... Sehat bhi...

होली



GURUJI PRODUCTS PVT. LTD.

HELPLINE No.: +91 731 2515598

रंगों का त्योहार

होली



‘होली’ वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय और नेपाली लोगों का त्यौहार है, यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

‘होली’ रंगों का तथा हँसी-खुशी का त्योहार है, यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है, जो आज विश्वभर में मनाया जाने लगा है। रंगों का त्यौहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है, यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्यौहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं, वहाँ भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है, पहले दिन को ‘होलिका’ जलायी जाती है, जिसे ‘होलिका’ दहन भी कहते हैं, दूसरे दिन को प्रमुखतः धुलेंडी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन भी कहते हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर ‘होली’ के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। माना जाता है कि ‘होली’ के दिन लोग पुरानी कटुता को भूला कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है, इसके बाद स्नान कर, विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। ‘होली’ का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है, इसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है, इस दिन से फाग और धमाल का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इटलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। गुझिया ‘होली’ का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है, इस दिन कांजी

के बड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है, नए कपड़े पहन कर ‘होली’ की शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं जहाँ उनका स्वागत गुझिया, नमकीन व टंडाई से किया जाता है। ‘होली’ के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा महात्म्य है।

होलिका दहन की मुख्य कथा

‘होली’ से सम्बन्धित मुख्य कथा के अनुसार एक नगर में हिरण्यकश्यप नाम का दानव राजा रहता था, वह सभी को अपनी पूजा करने को कहता था, लेकिन उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का उपासक भक्त था। हिरण्यकश्यप ने भक्त प्रह्लाद को बुलाकर भगवान का नाम न जपने को कहा तो प्रह्लाद ने स्पष्ट रूप से कहा, पिताजी! परमात्मा ही समर्थ है। प्रत्येक कष्ट से परमात्मा ही बचा सकता है। मानव समर्थ नहीं है, यदि कोई भक्त साधना करके कुछ शक्ति परमात्मा से प्राप्त कर लेता है तो वह सामान्य व्यक्तियों में तो उत्तम हो जाता है, परंतु परमात्मा से उत्तम नहीं हो सकता।

यह बात सुनकर अहंकारी हिरण्यकश्यप क्रोध से लाल पीला हो गया और सिपाहियों से बोला कि इसको ले जाओ, मेरी आँखों के सामने से और जंगल में सर्पों में डाल आओ। सर्प के डसने से यह मर जाएगा, ऐसा ही किया गया, परंतु प्रह्लाद मरा नहीं, क्योंकि सर्पों ने प्रह्लाद को डसा नहीं। प्रह्लाद की कथा के अतिरिक्त यह पर्व राक्षसी दुंडी, राधा कृष्ण के रास और कामदेव के पुनर्जन्म से भी जुड़ा हुआ है, कुछ लोगों का मानना है कि होली में रंग लगाकर, नाच-गाकर लोग शिव के गणों का वेश धारण करते हैं तथा शिव की बारात का दृश्य बनाते हैं, कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था, इसी खुशी में गोपियों और ग्वालों ने रासलीला की और रंग खेला था।

परंपराएँ

‘होली’ के पर्व की तरह इसकी परंपराएँ भी अत्यंत प्राचीन हैं और इसका स्वरूप और उद्देश्य समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन काल में यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी। वैदिक काल में इस पर्व को **शेष पृष्ठ १७ पर...**





होली के इस त्यौहार में छिपा है मिठास,
रंग और गुलाल में छिपा हैं ढेर सारा प्यार

Gouri Shankar Rathi
Saroj Rathi
Amit Kumar Rathi

AMIT TREXIM PRIVATE LIMITED

2A, Suvarnalok, 34, Malony Road, T. Nagar, Chennai, Tamilnadu, Bharat- 600017.
Tel: 044-24337156 | Call: +91 9620232579 | Email: amitkumarr@gmail.com

Farm House & Residence: "Brindavan", 3/285, V.V. Subramaniam Salai, Nainar Kuppam,
Uthandi, Chennai, Tamil Nadu, Bharat - 600119

Tel: 044-24530755 | Call: +91 9840009451 / 9962235571 | Email: gourishankarrathi@gmail.com

पृष्ठ १६ से... नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता था, उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। अन्न को 'होला' कहते हैं, इसी से इसका नाम 'होलिकोत्सव' पड़ा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है, इस उत्सव के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है, अतः यह पर्व नवसंवत् का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है, इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादितिथि कहते हैं।

'होली' का पहला काम झंडा या डंडा गाड़ना होता है, इसे किसी सार्वजनिक स्थल या घर के अहाते में गाड़ा जाता है, इसके पास ही 'होलिका' की अग्नि इकट्टी की जाती है, 'होली' से काफ़ी दिन पहले से ही यह सब तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं, पर्व का पहला दिन 'होलिका' दहन का दिन कहलाता है, इस दिन चौराहों पर व



जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ 'होली' जलाई जाती है, इसमें लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं, कई स्थलों पर 'होलिका' में

भरभोलिए जलाने की भी परंपरा है, 'भरभोलिए' गाय के गोबर से बने ऐसे उपले होते हैं जिनके बीच में छेद होता है, इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है। एक माला में सात 'भरभोलिए' होते हैं। 'होली' में आग लगाने से पहले इस माला को भाइयों के सिर के ऊपर से सात बार घूमा कर फेंक दिया जाता है, रात को 'होलिका' दहन के समय यह माला 'होलिका' के साथ जला दी जाती है, इसका यह आशय है कि 'होली' के साथ भाइयों पर लगी बुरी नज़र भी जल जाए। लकड़ियों व उपलों से बनी इस 'होली' का दोपहर से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। घरों में बने पकवानों का यहाँ भोग लगाया जाता है, दिन ढलने पर ज्योतिषियों द्वारा निकाले मुहूर्त पर होली का दहन किया जाता है, इस आग में नई फसल की गेहूँ की बालियों और चने के 'होले' को भी भूना जाता है। 'होलिका' का दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है, यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है, गाँवों में लोग देर रात तक 'होली' के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं।

'होली' से अगला दिन धूलिवंदन कहलाता है, इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है, लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज 'होली' के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

'होली' के दिन घरों में खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न शेष पृष्ठ १८ पर...

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

१०

पृष्ठ १७ से... व्यंजन (खाद्य पदार्थ) पकाए जाते हैं, इस अवसर पर अनेक मिठाइयाँ बनाई जाती हैं जिनमें गुड़ियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बेसन के सेव और दहीबड़े भी सामान्य रूप से उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर परिवार में बनाए व खिलाए जाते हैं। कांजी, भांग और टंडाई इस पर्व के विशेष पेय होते हैं, पर ये कुछ ही लोगों को भाते हैं, इस अवसर पर उत्तरी भारत के प्रायः सभी राज्यों के सरकारी कार्यालयों में अवकाश रहता है, पर दक्षिण भारत में उतना लोकप्रिय न होने की वजह से इस दिन सरकारी संस्थानों में अवकाश नहीं रहता।

विशिष्ट उत्सव

भारत में 'होली' का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है। ब्रज की 'होली' आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। बरसाने की लठमार 'होली' काफ़ी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं, इसी प्रकार मथुरा और वृंदावन में भी १५ दिनों तक 'होली' का पर्व मनाया जाता है। कुमाऊँ की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती हैं, यह सब 'होली' के कई दिनों पहले शुरू हो जाता है। हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने की प्रथा है। बंगाल की दोल जात्रा चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रूप में मनाई जाती है। जुलूस निकलते हैं और गाना बजाना भी साथ रहता है, इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की रंग पंचमी में सूखा गुलाल खेलने, गोवा के शिमगो में जुलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है। तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोत्सव है जबकि मणिपुर के



याओसांग में योंगसांग उस नन्ही झोंपड़ी का नाम है जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए 'होली' सबसे बड़ा पर्व है, छत्तीसगढ़ की 'होरी' में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी इलाकों में बेहद धूमधाम से मनाया जाता है 'भगोरिया', जो 'होली' का ही एक रूप है। बिहार का फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है और नेपाल की 'होली' में इस पर धार्मिक व सांस्कृतिक रंग दिखाई देता है, इसी प्रकार विभिन्न देशों में बसे प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कॉन या वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में अलग-अलग प्रकार से 'होली' के श्रृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ हैं।

होली मनाने का तरीका

'होली' की पूर्व संध्या पर यानि पूजा वाले दिन शाम को बड़ी मात्रा में 'होलिका' दहन किया जाता है और लोग अग्नि की पूजा करते हैं। 'होली' की परिक्रमा शुभ

मानी जाती है, किसी सार्वजनिक स्थल या घर के अहाते में उपले व लकड़ी से 'होली' तैयार की जाती है। 'होली' से काफ़ी दिन पहले से ही इसकी तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। अग्नि के लिए एकत्र सामग्री में लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। गाय के गोबर से बने ऐसे उपले जिनके बीच में छेद होता है जिनको गुलरी, भरभोलिए या झाल आदि कई नामों से अलग-अलग क्षेत्र में जाना जाता है, इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है।



लकड़ियों व उपलों से बनी इस 'होली' का सुबह से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। 'होली' के दिन घरों में खीर, पूरी और पकवान बनाए जाते हैं, घरों में बने पकवानों से भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर मुहूर्त के अनुसार 'होली' का दहन किया जाता है, इसी में से आग ले जाकर घरों के आंगन में रखी निजी पारिवारिक 'होली' में आग लगाई जाती है, इस आग में गेहूँ, जौ की बालियों और चने के 'होले' को भी भूना जाता है, दूसरे दिन सुबह से ही लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि लगाते हैं, ढोल बजा कर 'होली' के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है, सुबह होते ही लोग रंगों से खेलते अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से ही सबका स्वागत किया जाता है, इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। 'होली' के अवसर पर सबसे अधिक खुश बच्चे होते हैं, वह रंग-बिरंगी पिचकारी को अपने सीने से लगाए, सब पर रंग डालते भागते दौड़ते मजे लेते हैं, पूरे मोहल्ले में भागते फिरते इनकी आवाज सुन सकते हैं 'होली है..!' एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है, इसके बाद स्नान कर विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

आधुनिक काल में होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-टंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फिल्मी विभत्स गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं, लेकिन इससे 'होली' पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धमार, चैती और टुमरी की शान में कमी नहीं आती, अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं, इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाब जल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से 'होली' खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। 'होली' की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है।



हारना सबसे बड़ी असफलता नहीं है,
परन्तु हारने के बाद प्रयास छोड़ देना ही,
सबसे बड़ी असफलता है



“

It is our believe that most deserving people are those who have been selected by LORD to stand by the taste of time, thereby purifying them and get opportunity to come more close to LORD..... ”

DURGADUTTJI PATODIA MEMORIAL FOUNDATION

Dr. Sunil Patodia B.Com (Hons),FCA,PhD
Chief Executive Officer

Flat 4B, Block A, Raintree Apartments 21,Venus Colony, 2nd Street,
Alwarpet, Chennai, Tamilnadu, Bharat- 600 018

भ्रमणध्वनि : 09841013844

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

बैकुण्ठ लोक के द्वार खोलता है होलिका दहन



वैदिक काल से ही 'होलिकोत्सव' को नवत्रिष्टि यज्ञ कहते आए हैं, कालान्तर में प्रहलाद को मारने का प्रयास जब उसके पिता राक्षस सम्राट हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका के द्वारा किया तो 'होलिका' तो भस्म हो गयी, परन्तु प्रहलाद बच गये, तभी से प्रहलाद के बचने की स्मृति और होलिका (बुराई) के दहन की याद में इसे पर्व के रूप में मनाया जाता है।

मनाने की विधि:- 'होली' पर्व पूर्णिमा के दिन पड़ता है, अतः नर-नारी सत्यनारायण का व्रत रख कर सूर्यास्त से पूर्व पूजा करके 'होलिका' दहन की तैयारी आरम्भ करनी चाहिए, व्रत नहीं रख सकें तो अपने आंगन के पवित्र कोने में एक बांस को प्रहलाद का रूप मानते हुए रखें, उसके आस-पास गोबर के बटिये और लकड़ी व घास फूस लगायें और कच्चे सूत से लपेट दें। रोली, चावल, धनिया, हल्दी की गाँठ और गुड़ चढ़ाने हैं, परिवार का मुखिया शुभ मुहूर्त में निम्नलिखित मंत्र उच्चारण से उसकी पूजा करता है साथ ही

'अहकूटा भयत्रसैः कृतः त्वं होलि बालिशैः'

'अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूति-भूति प्रदायिनीम्।'

परिक्रमा करके हाथ जोड़ कर प्रहलाद रूपी बांस को निकालकर अग्नि लगाता है। स्त्रियां अपने-अपने क्षेत्र परम्परा के अनुसार गीत गाती हैं। बर्तन में पानी, तिल का लड्डू, हल्दी की गाँठ, मोठ के दाने, सब 'होली अग्नि' को दिखाती हैं। मोठ भूमि पर गिराकर पानी से अर्ध देवों और गीत गाते-गाते परिक्रमा कर पूजन समाप्त करें। पुरुष और बच्चे गेहूँ, जौ, चने की बालियां होली की लपटों में जलाकर दाने निकाल कर सब में बाटें और प्रसाद के रूप में बिना चबाये निगल सकते हैं। आग्रमंजरी तथा चंदन को मिलाकर भी खाते हैं ऐसी मान्यता है, यह प्रसाद ग्रहणकर्ता को बैकुण्ठ लोक ले जाता है।

नई उमंग और नए उत्साह का संचार करती है होली

होली अनेकता में एकता का प्रतीक एक राष्ट्रीय एवं सामाजिक पर्व है।

विविध रंगों से ओत-प्रोत यह त्यौहार फाल्गुन-पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। राजस्थान में 'होली' एक अलग शैली और अलग अंदाज में मनाई जाती है। होली के कई दिन पहले से ही ढप-धमाल, गिंदड़ आदि लोक नृत्यों के रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। रात-रात भर चलनेवाले इन कार्यक्रमों के जरिए नई उमंग और नए उत्साह का संचार होता है।

होलिका दहन का मुहूर्त: 'होलिका दहन' विशेष मुहूर्त में ही किया जाता है। प्रतिपदा, चतुर्दशी, भद्रा तथा दिन में 'होलिका दहन' का विधान नहीं है।

पूजा विधि एवं सामग्री : सर्वप्रथम थोड़े से गोबर और जल से भूमि पर चौका लगायें, फिर होली का डंडा रोपें और चारों ओर बड़कुल्लों की माला लगायें। मालाओं के आस-पास गोबर की ढाल, तलवार, खिलौना आदि रखें। जल, मौली, रोली, चावल, पुष्प, गुलाल आदि से होली का पूजन करें। पूजन के बाद ढाल व तलवार अपने घर में रख लें। बड़कुल्लों की चार माला अपने घर में पितरजी, हनुमानजी, शितला माता और घर के नाम पर उठाकर अलग रख दें।

होलिका पर्व : इस दिन सब स्त्रियां कच्चे सूत की कूकड़ी, जल का लोटा, नारियल, कच्चे चने युक्त डालियां, पापड़ द्वारा होली की पूजा करें। पूजन के बाद 'होलिका' को जलाया जाता है, इस त्यौहार पर व्रत भी करना चाहिए। 'होली' के दिन प्रातः स्नान आदि कर पहले हनुमानजी, भैरोजी आदि देवताओं की पूजा करते हैं, उन पर जल, रोली, मोली, चावल, पुष्प, गुलाल, चंदन, नारियल, नैवेद्य आदि चढ़ायें। दीपक से आरती कर प्रणाम करें, फिर आप जिन इष्ट देवों को मानते हैं उनकी भी पूजा करें। 'होली' में कच्चे चने युक्त हरी डालियां, कच्चे गेहूँ की टहनियां (बालें) आदि भूनकर वापस घर ले आएँ, 'होली' जलने पर पुरुष होली के डंडे को बाहर निकाल लें, क्योंकि इस डंडे को भक्त प्रहलाद का रूप माना जाता है।





आचार्य महाप्रज्ञ जी

होली के इस त्यौहार में छिपा है मिठास,
रंग और गुलाल में छिपा हैं ढेर सारा प्यार



Bachhraj Bhansali

Mob. : 9341333986/ 9886302694



मोरो का झुंड महात्मा महाप्रज्ञ हॉस्पिटल
परिसर में सायं कालीन भ्रमण पर निकले है

Bhansali Plastic House

1 st Floor, # 22/18, Namburi Mansion, Kumbarpet,
Main Road, Bengaluru, Karnataka, Bharat-560002

Ph.:- 080-43759986

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

खेलों होली अपनों के संग,
जीवन में भर दे खुशियों के रंग
होली की हार्दिक शुभकामनायें



Laxmikant Kedia

Mob. 9820057216

Rahul Kedia

Mob. 9820026146

SHREE SHANKAR SILK MILLS PVT. LTD.

601, Rajkailash, Opp. Fidai Baug, V.P. Road,
Andheri West, Mumbai Maharashtra, Bharat-400058
Ph. : 022-65740985 / 65104772

होली के इस त्यौहार में छिपा है मिठास,
रंग और गुलाल में छिपा हैं ढेर सारा प्यार



Kishan Kumar Kedia

Mob: 09820072713

GARNET CONSTRUCTIONS LTD.

501, Laxmi Mall, Above Apex Bank Ltd.,
New Link Road, Andheri West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400053
Tel: 022-42578500

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगर्यें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

२१



होली आई रे...

फागुन आते ही चहुं ओर 'होली' के रंग दिखाई देने लगते हैं, जगह-जगह 'होली' मिलन समारोहों का आयोजन होने लगता है। 'होली' हर्षोल्लास, उमंग और रंगों का पर्व है, यह पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, इससे एक दिन पूर्व 'होलिका' जलाई जाती है, जिसे 'होलिका' दहन भी कहा जाता है। दूसरे दिन रंग खेला जाता है, जिसे धुलेंडी, धुरखेल तथा धूलिवंदन कहा जाता है। लोग एक-दूसरे को रंग, अबीर-गुलाल लगाते हैं। रंग में भरे लोगों की टोलियां नाचती-गाती गांव-शहर में घूमती रहती हैं। ढोल बजाते और 'होली' के गीत गाते लोग मार्ग में आते-जाते लोगों को रंग लगाते हुए 'होली' को हर्षोल्लास से खेलते हैं, विदेशी लोग भी होली खेलते हैं, सांध्य काल में लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं और मिष्ठान बांटते हैं।

पुरातन धार्मिक पुस्तकों में 'होली' का वर्णन अनेक मिलता है। नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख है। विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से तीन सौ वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी 'होली' का उल्लेख किया गया है। 'होली' के पर्व को लेकर अनेक कथाएं प्रचलित हैं, सबसे प्रसिद्ध कथा विष्णु भक्त प्रह्लाद की है। माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था, वह स्वयं को भगवान मानने लगा था, उसने अपने राज्य में भगवान का नाम लेने पर प्रतिबंध लगा दिया था, जो कोई भगवान का नाम लेता, उसे दंडित किया जाता था। हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था। प्रह्लाद की प्रभु भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकश्यप ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने भक्ति के मार्ग का त्याग नहीं किया। हिरण्यकश्यप की बहन 'होलिका' को



वरदान प्राप्त था कि वह अग्नि में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकश्यप ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि कुंड में बैठे। अग्नि कुंड में बैठने पर 'होलिका' तो जल गई, परंतु प्रह्लाद बच गया। भक्त प्रह्लाद की स्मृति में इस दिन 'होलिका' जलाई जाती है, इसके अतिरिक्त यह पर्व राक्षसी दुंदी, राधा कृष्ण के रास और कामदेव के पुनर्जन्म से भी संबंधित है। कुछ लोगों का मानना है कि होली में रंग लगाकर, नाच-गाकर लोग शिव के गणों का वेश धारण करते हैं तथा शिव की बारात का दृश्य बनाते हैं। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन पूतना

नामक राक्षसी का वध किया था, इससे प्रसन्न होकर गोपियों और ग्वालियों ने रंग खेला था।

देश में होली का पर्व विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है। ब्रज की होली मुख्य आकर्षण का केंद्र है। बरसाने की लठमार होली भी प्रसिद्ध है, इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएं उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं।

मथुरा का प्रसिद्ध ४० दिवसीय होली उत्सव वसंत पंचमी से ही प्रारंभ हो जाता है, श्री राधा रानी को गुलाल अर्पित कर होली उत्सव शुरू करने की अनुमति मांगी जाती है, इसी के साथ ही पूरे ब्रज पर फाग का रंग छाने लगता है। वृंदावन के शाहजी मंदिर में प्रसिद्ध वसंती कमरे में श्रीजी के दर्शन किए जाते हैं, यह कमरा वर्ष में केवल दो दिन के लिए खुलता है। मथुरा के अलावा बरसाना, नंदगांव, वृंदावन आदि सभी मंदिरों में भगवान और भक्त पीले रंग में रंग जाते हैं। ब्रह्मर्षि दुर्वासा की पूजा की जाती है। हिमाचल प्रदेश के कुलू में भी वसंत पंचमी से ही लोग 'होली' खेलना प्रारंभ कर देते हैं। कुलू के रघुनाथपुर मंदिर में सबसे पहले वसंत शेष पृष्ठ २३ पर...



खेलों होली अपनों के संग,
जीवन में भर दे खुशियों के रंग
होली की हार्दिक शुभकामनायें



केशर चन्द पाडिया
Mob: 098300 31596

ईस्टर्न पोलिक्राफ्ट
इन्डस्ट्रीज लिमिटेड

1/1 ए, भेनसीट्राट रो, प्रथम तल्ला, कोलकाता, प.बंगाल, भारत - 700001
Ph: 033-2248-7191 | Fax: 4410 033-22483691
Email: padiakc@cal.vsnl.net.in
निवास : "लेक टावर्स" 87, साऊथर्न एवेन्यू, कोलकाता, भारत-700026

होली के इस त्यौहार में छिपा है मिठास,
रंग और गुलाल में छिपा हैं ढेर सारा प्यार



Kamal
COTSPIN PVT. LTD.

A Group well established
"Lath Bhai Group"
in Textiles for over 50 Years.



"Ginning, Spinning, Sizing, Weaving, Processing..."

Corporate Office: Kamal Cotspin Pvt. Ltd
Shah Bazzar, Burhanpur, Madhya Pradesh, Bharat-450 331
Tel: 07325-255203, 288025
Email: sales@kamalcotspin.com

पृष्ठ २२ से... पंचमी के दिन भगवान रघुनाथ पर गुलाल चढ़ाया जाता है, फिर भक्तों की 'होली' शुरू हो जाती है। लोगों का मानना है कि रामायण काल में हनुमान ने इसी स्थान पर भरत से भेंट की थी। कुमाऊं में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। बिहार का फगुआ प्रसिद्ध है। हरियाणा की 'धुलंडी' में भाभी पल्लू में ईंटें बांधकर देवों को मारती हैं। पश्चिम बंगाल में 'दोल जात्रा' निकाली जाती है, यह पर्व चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। शोभायात्रा निकाली जाती है। महाराष्ट्र की 'रंग पंचमी' में सूखा गुलाल खेला जाता है। गोवा के 'शिमगो' में शोभा यात्रा निकलती है और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्ख 'शक्ति प्रदर्शन' करते हैं। तमिलनाडु की 'कमन पोडिगई' मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंत का उत्सव है। मणिपुर के याओसांग में योंगसांग उस नन्ही झोपड़ी का नाम है, जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासी भी धूमधाम से 'होली' मनाते हैं। छत्तीसगढ़ में लोक गीतों के साथ 'होली' मनाई जाती है। मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी 'भगोरिया' मनाते हैं। भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी 'होली' मनाई जाती है। 'होली' सदैव ही साहित्यकारों का प्रिय पर्व रहा है, प्राचीन काल के संस्कृत साहित्य में 'होली' का उल्लेख मिलता है, श्रीमद्भागवत महापुराण में रास का वर्णन है, अन्य रचनाओं में 'रंग' नामक उत्सव का वर्णन है, इनमें हर्ष की



प्रियदर्शिका एवं रत्नावली और कालिदास की कुमारसंभवम् तथा मालविकाग्निमित्रम् सम्मिलित है। भारवि एवं माघ सहित अन्य कई संस्कृत कवियों ने अपनी रचनाओं में वसंत एवं रंगों का वर्णन किया है, चंद्र बरदाई द्वारा रचित हिंदी के पहले महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में होली का उल्लेख है, भक्तिकाल तथा रीतिकाल के हिन्दी साहित्य में 'होली' का विशिष्ट उल्लेख मिलता है। आदिकालीन कवि विद्यापति से लेकर भक्तिकालीन सूरदास, रहीम, रसखान, पद्माकर, जायसी, मीराबाई, कबीर और रीतिकालीन बिहारी, केशव, घनानंद आदि कवियों ने होली को विशेष महत्व दिया है। प्रसिद्ध कृष्ण भक्त महाकवि सूरदास ने वसंत एवं 'होली' पर अनेक पद रचे हैं। भारतीय सिनेमा ने भी होली को मनोहारी रूप में पेश किया है, अनेक फिल्मों में 'होली' के कर्णप्रिय गीत हैं। 'होली' आपसी ईर्ष्या-द्वेष भावना को बुलाकर संबंधों को मधुर बनाने का पर्व है, परंतु देखने में आता है कि इस दिन बहुत से लोग शराब पीते हैं, जुआ खेलते हैं, लड़ाई-झगड़े करते हैं, रंगों की जगह एक-दूसरे में कीचड़ डालते हैं, काले-नीले पक्के रंग एक-दूसरे पर फेंकते हैं, ये रंग कई दिन तक नहीं उतरते, रसायन युक्त इन रंगों के कारण अक्सर लोगों को त्वचा संबंधी रोग हो जाते हैं, इससे आपसी कटुता बढ़ती है, होली प्रेम का पर्व है, इसे प्रेमभाव के साथ ही मनाना चाहिए, पर्व का अर्थ रंग लगाना या हुड़दंग करना नहीं है, बल्कि इसका अर्थ आपसी द्वेषभाव को भुलाकर भाईचारे को बढ़ावा देना है क्योंकि 'होली' खुशियों का पर्व है।

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

२३



होलिका दहन के लिए पेड़ों से टूट कर गिरी हुई लकड़ियाँ उपयोग में ली जाती हैं तथा हर दिन इस ढेर में कुछ-कुछ लकड़ियाँ डाली जाती हैं, होलाष्टक के दिन होलिका दहन के लिए २ ढंडे स्थापित किए जाते हैं, जिनमें एक को होलिका तथा दूसरे को प्रह्लाद माना जाता है।

पौराणिक शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार जिस क्षेत्र में होलिका दहन के लिए ढंडा स्थापित हो जाता है, उस क्षेत्र में होलिका दहन तक कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता, इन दिनों शुभ कार्य करने पर अपशकुन होता है, इस वर्ष होलाष्टक १६ मार्च से शुरू होकर २३ मार्च तक रहेगा, इस आठ दिनों के दौरान सभी शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं, इसके अंतर्गत २४ मार्च को होलिका

दहन और २५ मार्च को धुलेंडी खेली जाएगी। प्रचलित मान्यता के अनुसार शिवजी ने अपनी तपस्या भंग करने का प्रयास करने पर कामदेव को फाल्गुन शुक्ल अष्टमी तिथि को भस्म कर दिया था।

कामदेव प्रेम के देवता माने जाते हैं, इनके भस्म होने के कारण संसार में शोक की लहर फैल गई थी।

जब कामदेव की पत्नी रति द्वारा भगवान शिव से क्षमायाचना की गई, तब शिवजी ने कामदेव को पुनर्जीवन प्रदान करने का आश्वासन दिया, इसके बाद लोगों ने खुशी मनाई। होलाष्टक का अंत धुलेंडी के साथ होने के पीछे एक कारण यह भी माना जाता है।

जानिए कैसे मनाएं होलाष्टक?

होलिका पूजन करने हेतु होलिका दहन वाले स्थान को गंगा जल से शुद्ध किया जाता है, फिर मोहल्ले के चौराहे पर होलिका पूजन के लिए ढंडा स्थापित किया जाता है, उसमें उपले, लकड़ी एवं घास डालकर ढेर लगाया जाता है।

(फार्म नं.- 4 नियम 8)

अखबारों के पंजीकरण केंद्रीय नियम 1956 के नियम के तहत 'मेरा राजस्थान' मुंबई के स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में घोषणा।

- 1) प्रकाशन का स्थान : गेलाई पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी- 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059
 - 2) प्रकाशन की अवधि : मासिक
 - 3) मुद्रक का नाम : विनय ग्राफिक्स, कोडिविटा
क्या भारतीय नागरिक हैं? : हाँ
 - 4) सम्पादक का नाम : बिजय कुमार जैन
क्या भारतीय नागरिक है? : हाँ
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059
 - 5) इस समाचार पत्र के स्वामी व सहभागी जिनका सहभाग एक प्रतिशत से ज्यादा हो उनका नाम व पता
1) बिजय कुमार जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059
 - 2) श्रीमती संतोष जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059
- मैं बिजय कुमार जैन, गेलाई पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के मुताबिक ऊपर लिखित विवरण सही है।
बिजय कुमार जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
तारीख 28 फरवरी 2024



हो ली सो हो ली, आओ रंगों के रंगीन त्योहार के स्वागत में
नये रंगों प्यार, स्नेह एवं सोहार्द से सजायें नव रंगीन रंगोली।।

आओ अमृत काल में मनायें अमृतमयी होली।।



मदनलाल दाधीच ईनाणीयाँ

भूतपूर्व अध्यक्ष अ.भा.दाधीच ब्राह्मण महासभा, सुजानगढ़

मो : 09414086667

३०२, शगुन रेजीडेंसी, जैन स्कूल के पास, बजाज रोड,
सीकर, राजस्थान, भारत- ३३२००१

मार्च २०२४

२४

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए



होली का त्योहार, रंगो का त्योहार, मिलकर मनाएं, खुशियों का त्यौहार
हम मिलकर मनाएं होली का त्यौहार



Sundar Lal Tanwar

भ्रमणध्वनि: 98300 49132

Ishwar Tanwar

भ्रमणध्वनि: 98304 36565

Durga ENTERPRISES
Mfg. of Girls Designer Wear

Ishwar Bhai

भ्रमणध्वनि: 98304 36565

Ram Bhai

भ्रमणध्वनि: 9836220834



19, Brojo Dulal Street, 3rd Floor, Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 007

होली के इस त्यौहार में छिपा है मिठास,
रंग और गुलाल में छिपा हैं ढेर सारा प्यार



Harlal Jangid

अध्यक्ष, जांगिड़ सेवा संघ मुंबई

Mob: 9987365115

3/601, Shanri Gardens, Sector 3,
Mira Road East, Dist. Thane,
Maharashtra, Bharat-401107

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार होली पर हार्दिक शुभकामनाएं



Sandeep Todi

DIRECTOR

Mob: 9830172176



G R FITTING MANUFACTURING PVT LTD

Our company offers various Metal Fittings for leather products by Zinc Die Casting under the brand name GRE. We also offer development of New Moulds for our Customers.

In addition to the manufacturing and electroplating units we also own an associate concern OOK INDIA, which is the sole selling distributor in India of OOK ZIPPERS (HONG KONG).

Our group of Concerns are:

- M/s Golden Peacock Electroplatings Pvt. Ltd.
- M/s G.R. Fitting Manufacturing (P) Ltd
- M/s G.R. Suppliers ● M/s OOK India
- M/s B.G Enterprise ● M/s Sunil Traders

Our field of electroplating includes Gold Plating, Silver Plating, Nickel Plating, Nickel Free Plating, Antique Plating, etc. Our products are in various colours such as Rose Gold, Hi-Black, Satin, Gun Metal, etc. All our goods are lacquered to enhance the quality and longevity of our Products. As our expertise has polished over decades, we have developed a wide range of cost-effective plating and other metal finishing processes. Depending on our customers' needs we offer a flexible range of accessories. Our Gold Plating is one of a kind where Pure Gold is used for the accessories adding a touch of luxury to the Bags.

With the introduction of Zinc Pressure Die Casting, we have become a ONE STOP SOLUTION for metal fittings for leather products.

3E, Nakuleshwar Bhattacharya Lane, Kolkata,
West Bengal, Bharat - 700026 | e-mail:- sandeptodi@live.in

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार, होली पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

R.A. Kraft Paper Pvt. Ltd.

R.S. Kraft Paper Ltd.

Indenter & Importer of Papers & Boards



FIBRE IMPEX
PVT. LTD.

Importer of Recovered Paper
From Various Parts of the World

Head Office : 504, Suryakiran Complex, 1, Bajaj Nagar,
Opp. VNIT, Nagpur, Maharashtra, Bharat - 400010
Ph.: 0712-2220626, 2242412, 2249685 Fax : 0712-2243248
E-mail : info@rakraftpaper.com

Mumbai Office : Unit No. 804, 8th Floor,
Lotus Link Square, New Link Road,
Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053
Ph.: 022-69455000

E-mail : mumbai@rakraftpaper.com
Website : www.rakraftpaper.com

Branches : Aurangabad | Hyderabad | Indore |
Kolhapur | Nasik | Pune | Vapi

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

होली पर बनायें विशेष व्यंजन



सामग्री:

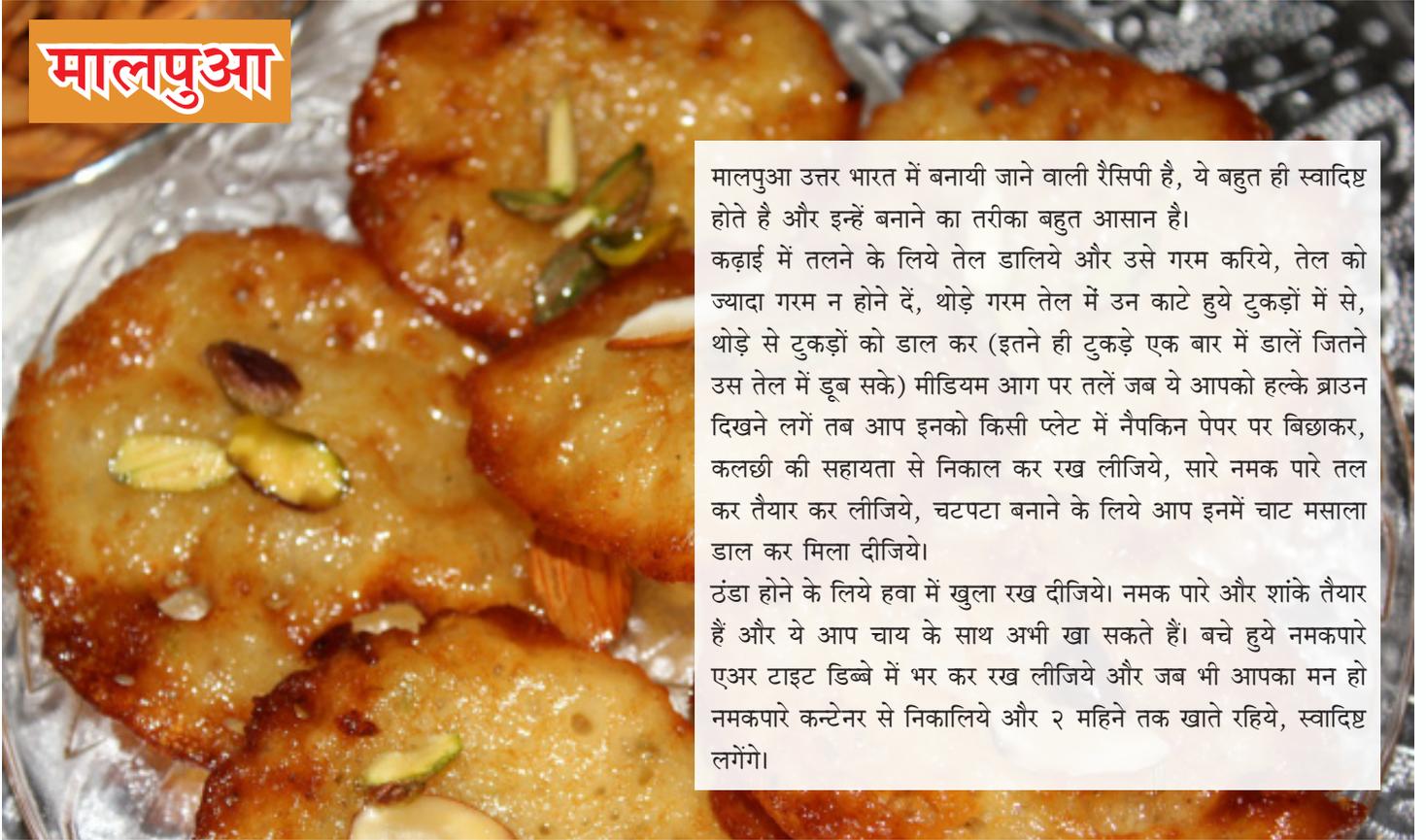
- 1 लीटर दूध
- 1/2 का टुकड़ा दालचीनी
- 1/2 चम्मच सौंफ

- 10-12 बादाम
- 10-12 काजू
- 10-12 पिस्ता
- 1/4 छोटा चम्मच सफ़ेद गोल मिर्च (या काली मिर्च) का पाउडर
- 3/4 चम्मच खसखस
- 1 चम्मच सूखी हुई गुलाब की पंखुड़ी
- 4-5 हरी इलाइची का पाउडर
- 3/4 कप चीनी

विधि

काजू, बादाम, पिस्ता, खसखस, सौंफ और गुलाब की पंखुड़ी को 4 घंटे पहले से पानी में भीगा दें..
फिर दूध और चीनी को छोड़ के ग्राइंडर में भीगी हुई सामग्री और बाकी बची सारी सामग्री मिला के बारीक पेस्ट बना लें..
फिर दूध में पिसा हुआ पेस्ट और चीनी मिलायें चीनी अच्छे से घुल जाने के बाद, एक ज्यूस छानने वाली छलनी से छान दे. (चाहे तो बचे हुए पेस्ट को एक बार फिर से पीस के दूध में मिला सकते हैं)
ठंडा होने के लिए फ्रिज में रख दें..
सर्व करने से पहले एक बार फिर से मिक्सर में चलायें..
ठंडी और स्वादिष्ट ठंडाई गर्मियों में पिएं और पिलायें..

मालपुआ



मालपुआ उत्तर भारत में बनायी जाने वाली रैसिपी है, ये बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं और इन्हें बनाने का तरीका बहुत आसान है।
कढ़ाई में तलने के लिये तेल डालिये और उसे गरम करिये, तेल को ज्यादा गरम न होने दें, थोड़े गरम तेल में उन काटे हुये टुकड़ों में से, थोड़े से टुकड़ों को डाल कर (इतने ही टुकड़े एक बार में डालें जितने उस तेल में डूब सके) मीडियम आग पर तलें जब ये आपको हल्के ब्राउन दिखने लगें तब आप इनको किसी प्लेट में नैपकिन पेपर पर बिछाकर, कलछी की सहायता से निकाल कर रख लीजिये, सारे नमक पारे तल कर तैयार कर लीजिये, चटपटा बनाने के लिये आप इनमें चाट मसाला डाल कर मिला दीजिये।
ठंडा होने के लिये हवा में खुला रख दीजिये। नमक पारे और शांके तैयार हैं और ये आप चाय के साथ अभी खा सकते हैं। बचे हुये नमकपारे एअर टाइट डिब्बे में भर कर रख लीजिये और जब भी आपका मन हो नमकपारे कन्टेनर से निकालिये और २ महिने तक खाते रहिये, स्वादिष्ट लगेंगे।

मार्च २०२४

२६

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें! जय भारत!



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए





व्यंजन

बालूशाही

बालूशाही खाने में एकदम खस्ता एवं स्वादिष्ट होती हैं एवं इसमें मावा का उपयोग नहीं होता। होली के पर्व पर मिठाइयां तो हम बनायेंगे ही। मिठाइयों की अधिक मांग के कारण बाजार में जो मावा मिलता है, वह अधिकांश मिलावटी होता है इसलिये ऐसी मिठाई बनाना अच्छा है जिसमें मावा उपयोग नहीं होता, इसलिए आईये, आज हम बालूशाही बनायें।

आवश्यक सामग्री

- मैदा- ५०० ग्राम
- घी- १५० ग्राम (३/४ कप) मैदा में मिलाने के लिये
- बेकिंग सोडा-आधा चम्मच ● दही-आधा कप ● चीनी- ६०० ग्राम
- घी तलने के लिये

विधि-

मैदा में बेकिंग सोडा, दही और घी डालकर मिलाइये, गुनगुने पानी की

सहायता से नरम-नरम गूथ लीजिये। आटा को ज्यादा मलिये मत, बस आटा इकट्ठा कीजिये और आटे को सैट होने के लिये २० मिनट के लिये रख दीजिये।

आटे को सैट होने के बाद थोड़ा सा मल कर ठीक कीजिये, गुथे आटे से छोटे नीबू के साइज की लोइयां तोड़िये, इसे दोनों हथेलियों में एकदम गोल-गोल कीजिये। पेड़े की तरह दबाईये एवं दोनों अंगूठे से दबा कर गड्डा बना दीजिये, सारे आटे की इसी तरह बालूशाही तैयार कर लीजिये।

तलने के लिये कढ़ाई में घी डालकर गरम कीजिये, जब घी गर्म हो जाये तो तैयार बालूशाही को गरम घी में डालिये, धीमी और मीडियम आग पर बालूशाही को दोनों ओर अच्छा होने तक तल लीजिये, तेज आग पर तली बालूशाही अन्दर से अच्छी तरह से नहीं सिक पायेंगी। सुनहरी तली हुई बालूशाही कढ़ाही से निकाल कर थाली या प्लेट में रख लीजिये। सारी बालूशाही तल कर निकाल लीजिये।

६०० ग्राम चीनी में ३०० ग्राम पानी मिलाकर एक तार की चाशनी बना लीजिये, गैस बन्द कीजिए और हल्की गरम चाशनी में बालूशाही डाल दीजिये। बालूशाही को ४-५ मिनट तक डूबा रहने के बाद इन्हें चिमटे की सहायता से एक-एक करके निकाल कर थाली या प्लेट में रखिये, ठंडा कर लीजिये ताकि बालूशाही पर चढी चाशनी सुख जाये। स्वादिष्ट बालूशाही तैयार है, आप इन्हें किसी भी एअर टाइट कन्टेनर में भरकर रख लीजिये, २० दिनों तक जब भी आपका मन करे कन्टेनर से बालूशाही निकालिये और खाइये।

मूँग री दाल रा बड़ा

सामग्री — 1 किलो मूँग की दाल, 50 ग्राम गेहूँ का आटा, नमक, लाल मिर्च, हरा धनिया, पाना मेथी, साबूत धनिया, तेल, हरी मिर्च, अदरक, हींग, तलने के लिए तेल।

विधि — मूँग की दाल को 2 घंटे भीगो कर दरदरी पीस लें

अब इसमें पीसी अदरक, हरी मिर्च, साबूत धनिया, हींग व थोड़ा सा गेहूँ का आटा भी मिला लें। थोड़ा तेल भी मिला दें। हरी धनिया पत्ती, पाना मेथी होतो उसे भीगो कर डाल दें।

सभी चीजों को दाल में अच्छी तरह मिला कर, तेल गर्म करके गोल पकौड़िया निकाल कर हरी चटनी के साथ परोसें।

चलनी या झारे रा बड़ा

दाल का बड़ा जैसा ही समान मिलाकर उसको बड़े की चलनी या झारे से गरम तेल में डालें। सिकने के बाद निकाल लें।

हाथ रा बड़ा

दाल के बड़ा जैसा ही समान मिलाकर उसको कटोरी के ऊपर गीला कपड़ा लगाकर उसके ऊपर दाल को थोड़ा रखकर हाथ से फैला कर गरम तेल में तल लें।



पाइनेप्पल ठंडाई



ठंडाई तो होली पर पिया जाने वाला खास पेय है, इस बार इसे बनाएं जरा हट के तैयारी का समय: 20 मिनट

सर्विंग साइज : 6

1 लीटर दूध, आधा कप पिसी हुई शक्कर, 2-3 लच्छे केसर, 1 कप पाइनेप्पल प्युरी, कैन में उपलब्ध पाइनेप्पल से बनी हुई, 6 पाइनेप्पल स्लाइस गार्निशिंग के लिए

ठंडाई मसाला के लिए

आधा कप बादाम, 2 टेबल स्पून खसखस, 2 टेबलस्पून सौंफ, आधा टीस्पून इलायची पाउडर, 20 व्हाइट पेपरकॉर्न

दूध को उबाल कर ठंडा करें और अलग रख दें। ठंडाई मसाला बनाने के लिए बताई गई सभी सामग्रियों को मिला कर मिक्सर में अच्छी तरह ब्लेंड करें। अब दूध में ठंडाई पाउडर मिलाएं। इसे तीन-चार घंटे के लिए फ्रिज में रख दें, इसे छान लें। शक्कर और केसर के लच्छे डालकर अच्छी तरह मिलाएं। पाइनेप्पल स्लाइस से सजा कर सर्व करें।

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

२७

सिनेमा समाज का आईना है - सत्री मंडावरा

स्टार भारत चैनल पर शुरू हुए भगवान परशुराम के कथाकार सत्री मंडावरा राजस्थान के उदयपुर के रहने वाले हैं, उन्होंने राजस्थानियों की प्रसिद्ध पत्रिका 'मेरा राजस्थान' को बताया कि इस धारावाहिक में भगवान विष्णु के छोटे अंशवतार श्री परशुराम जी की जीवन यात्रा है साथ ही राजस्थान उदयपुर में स्थित परशुराम महादेव मंदिर एवं फरारा महादेव मंदिर का जिक्र है भी है कि किस तरह इन दोनों मंदिर का निर्माण हुआ। अपने आध्यात्मिक लेखन के सफर के बारे में सत्री मंडावरा बताते हैं कि जब से भगवान परशुराम जी की कथा लिखने का अध्याय शुरू हुआ, अपने आप जीवन में बहुत से परिवर्तन हुए, जैसे की अपने आप सुबह सुबह जल्दी उठ कर पूजा कर के ही लिखने बैठते थे, रोज़ संध्या आरती में शामिल हो जाते थे, लिखते समय अपने ऑफिस में जूते बाहर उतार कर आते थे और सभी के लिए नियम भी लगा दिया कि कोई भी जूते पहन कर अंदर नहीं आएगा।

सत्री मंडावरा कहते हैं कि यह धारावाहिक लिखना अपने जीवन का सर्वोत्तम अनुभव है, जैसे भगवान परशुराम आकर एक एक सीन अपने आप से लिखवा रहे हैं।

जब सात्विक धार्मिक यात्रा के बारे में सत्री जी से पूछा गया कि भविष्य में दो तीन विषय पर काम कर रहे हैं जैसे भगवान 'विश्वकर्मा', 'रुकमणीजी और श्री कृष्ण' पर किसी ने बहुत गहराई में अभी तक कुछ खास नहीं कहा तो इन विषय पर भी धारावाहिक बनायेंगे ताकि हमारे आराध्यदेव के बारे में आज की नई पीढ़ी को जानने समझने में आसानी होगी।



आज के दौर का इंस्टाग्राम रील एवं वेबसीरीज के बारे में जब पूछा गया तो उनका क्रोध कुछ इस तरह था कि इंस्टाग्राम पर लोग जो प्री में गंदगी फैला रहे हैं उस पर सरकार को प्रतिबंध लगाना चाहिए, यह समाज के लिए विकृति है सरकार को संज्ञान लेना चाहिए और वेबसीरीज के लिए उनका कहना है कि उन्होंने तो पहले ही सौगंध खाई है कि अपने जीवन में कभी भी किसी गैंगस्टर या नकारात्मक व्यक्ति को हीरो बताकर ना कोई फ़िल्म करेंगे और ना ही कोई वेब बनायेंगे, क्योंकि सिनेमा समाज का आईना है अब जब आईना गलत तस्वीर दिखाएगा तो समाज गलत रास्ते पर ही चलेगा, साहित्य और सिनेमा की ज़िम्मेदारी है कि समाज के उत्थान के लिए जो सही हो उसी दिशा में काम हो। भगवान परशुराम पर धारावाहिक लिखने के कारण कई शहर में ब्राह्मण समाज ने उन्हें सम्मानित भी किया है।



100% Microwave Safe, stainless steel
LEAKPROOF FOOD CONTAINERS

PREMIUM RANGE OF CLEANING PRODUCTS

GREAT CONCEPTS, WONDERFUL PRODUCTS, EXHAUSTIVE RANGE,
WELCOME TO THE WORLD OF AMAZING HOMEWARE AND PLASTIC UTILITY PRODUCTS....

For Corporate Enquiries Call +91-22-61542200, Email : info@joyo.in



होली का त्योहार, रंगों का त्योहार,
मिलकर मनाएं, खुशियों का त्यौहार
हम मिलकर मनाएं होली का त्यौहार

Murarilal Agrawal



M.A. EXPORTS

EXPORTERS-IMPORTERS-TRADERS COMMISSION AGENTS

Mumbai: 303, Saraf Mansion, 9/11, Old Hanuman Lane, Mumbai, Maharashtra Bharat-400002

दूरध्वनि : 022- 2205 0085 / 4970 1579 प्रमणध्वनि : 98200 76068 अणुडक : exportsma@gmail.com

Kolkata: 137, Netaji Subhash Road, 5th Floor, Kolkata, West Bangal, Bharat-700001.

दूरध्वनि : 033- 2268 2881 प्रमणध्वनि : 93397 32832/ 7980147683



M.R. AGENCIES

AGARWAL TEXTILE AGENCY



EXPORTERS-IMPORTERS-TRADERS COMMISSION AGENTS

Mumbai: 303, Saraf Mansion, 9/11, Old Hanuman Lane, Mumbai, Maharashtra Bharat-400002

दूरध्वनि : 022- 2205 0085 / 4970 1579 प्रमणध्वनि : 98200 76068 अणुडक : exportsma@gmail.com

Kolkata: 137, Netaji Subhash Road, 5th Floor, Kolkata, West Bangal, Bharat-700001.

दूरध्वनि : 033- 2268 2881 प्रमणध्वनि : 93397 32832/ 7980147683

Kanpur : 55/9, Bhargav Market, 2nd Floor, Kanpur, Uttar Pradesh, Bharat - 208 001.

दूरध्वनि : 0512- 2399533 प्रमणध्वनि : 7007158739 अणुडक : exportma@gmail.com

मार्च २०२४

२८

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए



रांची जिला मारवाड़ी सम्मेलन कार्यकारिणी की घोषणा

महामंत्री विनोद कुमार जैन, संयुक्त महामंत्री सह प्रवक्ता संजय सर्राफ एवं कोषाध्यक्ष कमलेश संचेती बने

रांची: भारत का एक राज्य झारखंड की राजधानी रांची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष ललित कुमार पोद्दार ने जिला मारवाड़ी सम्मेलन के सत्र २०२४-२६ की कार्यकारिणी समिति का गठन करते हुए पदधारियों एवं कार्य समिति सदस्यों की घोषणा की।

संरक्षक- भागचंद पोद्दार, गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, राजकुमार केडिया, ओमप्रकाश अग्रवाल, विनय कुमार सरावगी, सुरेश चंद्र अग्रवाल परामर्शदात्री समिति विद्याधर शर्मा, जुगल किशोर मारू, पूरणमल जैन, डॉ ओमप्रकाश प्रणव, राजकुमार मारू, रतनलाल बंका, अजय मारू, कमल कुमार केडिया, उम्मेदमल जैन, नंदकिशोर पाटोदिया, संजीव विजयवर्गीय, विश्वनाथ नारसरिया, अरुण कुमार बुधिया, प्रेम मित्तल, प्रेम कटारूका एवं राजेंद्र केडिया, अध्यक्ष ललित कुमार पोद्दार उपाध्यक्ष पवन कुमार पोद्दार, किशन कुमार साबू, रमेश शर्मा, नरेंद्र गंगवाल, मनोज कुमार चौधरी, महामंत्री विनोद कुमार जैन, संयुक्त महामंत्री कौशल कुमार राजगढ़िया, प्रमोद अग्रवाल, अजय सरावगी, प्रमोद सारस्वत, निर्भय शंकर हारित, संयुक्त महामंत्री सह प्रवक्ता- संजय सर्राफ,



कोषाध्यक्ष-कमलेश अंकेक्षक कुमार जैन, संगठन मंत्री- विकास कुमार अग्रवाल, विभागीय मंत्री संविधान एवं पंजीकरण विभाग- पवन कुमार शर्मा, सदस्यता विभाग- मनीष लोधा एवं अमित चौधरी, सेवा समिति- विजय कुमार खोवाल, जितेश अग्रवाल युवा समिति - सौरभ बजाज एवं सनी टिबडेवाल, महिला समिति- अनु पोद्दार एवं मीनाक्षी शर्मा, प्रतिभा सम्मान- विशाल पाड़िया विधि सहायता विभाग- दीपेश निराला, कला एवं फिल्म विभाग- आनंद जालान, साहित्य एवं संस्कृति विभाग नरेश बंका, गृह पत्रिका- अमर अग्रवाल, कार्यालय विभाग

निर्मल बुधिया एवं आकाश अग्रवाल, व्यापार समिति- रोहित पोद्दार एवं शैलेश अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्यों में रमाशंकर बगड़िया, अनिल अग्रवाल, सुरेश कुमार जैन, अशोक नारसरिया, मुकेश अग्रवाल, अजय डीडवानिया, पुरुषोत्तम विजयवर्गीय, रमन बोडा, विकास अग्रवाल, प्रकाशचंद्र नाहटा, राजेश भरतिया, मनोज रूईया, किशन शर्मा, नरेंद्र लखोटिया, प्रमोद बगड़िया, सुनील पोद्दार, द्वारका अग्रवाल, रौनक झुनझुनवाला, सुमित महलका, अजय खेतान एवं सुभाष राजगढ़िया को शामिल किया गया है।

उल्लास, आनंद, उमंग और भाईचारे के साथ जीवन व्यतीत करें
होली पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें



Shankarlal Agarwal Ritesh Agarwal
Mob: 09832150448 Mob: 09800066161

RITESH TRADEFIN LTD.

Manufacturers of
RTF Brand Strctural Steel & Sponge Iron

Lenin Sarani, Kanjilal Avenue, Durgapur, West Bengal Bharat - 713210
Ph: 0343-2553518 Email: mbispat_rtf@rediffmail.com

होली का त्योहार, रंगों का त्योहार, मिलकर मनाएं,
खुशियों का त्यौहार हम मिलकर मनाएं होली का त्यौहार

Ramesh Saraogi

Anil Saraogi



SARAOGI UDYOG PRIVATE LIMITED

Importer, Merchants &
Handling Agents for Coal and Coke

21, Hemant Basu Sarani, "Centre Point"
Suit No. 212, 2nd Floor, Kolkata, West Bengal-700001
Ph. +91-33-22481333 / 0674, +91-33-22138779 / 80 / 81
Fax: +91-33-22435334, +91-33-22138782
E-mail: info@saraogioduyog.com

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

२९

आचार्य विद्यासागरजी के जाने से पूरे युग का अंत : पुलकसागरजी



आचार्य पुलकसागरजी

आचार्य विद्यासागरजी महाराज के देवलोकगमन पर राष्ट्रसंत आचार्य पुलकसागरजी महाराज ने कहा, जैन समाज, पूरा संत समाज, पूरे मोक्षमार्ग के हम सभी महा शोक से गुजर रहे हैं। जैन जगत के सर्वोच्च, जैन जगत के संतशिरोमणि, जैन जगत का संपूर्ण चरित्र लुप्त हो गया है, देवलोक को आचार्य श्री विद्यासागरजी गुरुदेव प्राप्त हुए पर हम सबके लिए यह अपूरणीय क्षति है, ऐसा लगता है की पूरे युग का अंत हो गया है, अध्यात्म का अंत हो गया है, पूरे समाज को रोता

बिलखता हुआ महाराज श्री अपने गंतव्य को प्राप्त हुए। क्षमता के धनी, चरित्र के धनी आचार्य थे, तपस्वी थे। मैं उनके प्रति शोक संवेदनाएं प्रकट करता हूं, उन्होंने मेरे जीवन को मोक्षमार्ग में लगाया, वह मेरे ही नहीं मेरे गुरु के गुरु थे, जो लोग उनसे दीक्षित नहीं थे वह भी उन्हें अपना गुरु मानते थे। जैन अजैन के सबके आराध्य थे।

आचार्य विद्यासागरजी के पीछे युवा पीढ़ी दौड़ती थी: गुप्तिनंदीजी

आचार्य गुप्तिनंदीजी महाराज ने कहा सदी के महान आचार्य, संतशिरोमणि के नाम से विख्यात बालयति और सारे संसार को मोक्ष का मार्ग का ज्ञान दिया आचार्य श्री विद्यासागर जी ने वे स्वयं त्याग मार्ग पर चले, अनेक ग्रंथों का लेखन जिनके द्वारा हुआ, अनेक तीर्थों का जीर्णोद्धार, नवनिर्माण जिनके द्वारा हुआ, जंगम तीर्थों का जिन्होंने निर्माण किया और संसार में तप और त्याग क्या होता है अपनी साधना से



होली पर खरीदना ना भूलें चांदी की डिबिया

‘दीपावली’ पर्व पर आप अक्सर सोना-चांदी खरीदते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि ‘होली’ पर भी चांदी खरीदने का महत्व है, आइए जानें ‘होली’ पर क्यों खरीदें चांदी... ‘होली’ के दिन चांदी की डिबिया और सिक्का खरीदें और पीले वस्त्रों में काली हल्दी के साथ एक चांदी की डिबिया में चांदी का सिक्का रखकर धन रखने के स्थान पर रख देने से वर्ष भर मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है, होली पर भी मां लक्ष्मी वरदान देती है, इस दिन चांदी लाने से घर में ऐश्वर्य का आगमन होता है, विशेष कर नई चांदी की डिबिया में ‘होली’ की भस्म रखने से वर्ष भर आरोग्य और सौभाग्य का वास रहता है।

कर दिखलाया, जिनके शरण में बड़े-बड़े राजनेता, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि चरण में पहुंचते थे, दर्शन के लिए ऐसे गुरुदेव से लालायित थे। युवा पीढ़ी जिनके पीछे दौड़ती थी, ऐसे महान त्यागी, तपस्वी आचार्यश्री विद्यासागरजी महामुनिराज का देहपरिवर्तन हुआ। काफी समय से उनका स्वास्थ्य खराब था। स्वास्थ्य खराब होने के बाद अपनी चर्या के आगे बढ़ते रहे, उनका मोक्षगामी होना समाज के लिए अपूरणीय क्षति है, उनकी कमी कभी कोई पूरा नहीं कर सकता।



आचार्य गुप्तिनंदीजी



BROCADE PENDANT

Market Price ₹ 53,000
Our Price ₹ 37,000



SQUARE STUD EARRINGS

Market Price ₹ 84,000
Our Price ₹ 60,000



LINEA CONTORTA RING

Market Price ₹ 21,000
Our Price ₹ 15,000



DUAL LEAF EARRINGS

Market Price ₹ 19,000
Our Price ₹ 13,500



JAI SAI JEWELLERS

Real Diamond Jewellery

We are a premier artisanal jewellery enterprise by a family of passionate Jewellers and designers, carrying a legacy of 51 years in the industry.

Being manufacturers, at the grass root level of our supply chain, we provide our customers with pricing 35% to 40% lower than local players in the market and at half the prices when compared to renowned brands in India.

9820133160, 9819542952 jsjgroupindia.com mkatelier.com cancrijewells.com cancrijewells



होली का त्योहार, रंगों का त्योहार, मिलकर मनाएं, खुशियों का त्यौहार हम मिलकर मनाएं होली का त्यौहार

Harish S. Agrawal
Vijay S. Agrawal

Narendra S. Agrawal
Mob. 9820046998

Dinesh N. Agrawal
Mitesh H. Agrawal

SHA DEEPCHAND PANNALAL MAWAWALA

Pure & Fresh Mawa Of Gujrat Wholesaler & Retailer

243, Sant Sena Marg, 2nd Kumbharwada, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400004 Ph.: 022-23813798, 23883220

Umesh N. Agrawal

Mob.9892622233



International & Domestic Air & Rail Tickets

Shop No.12, Kavita Bldg., Main Carter Road, Next to ICICI Bank, Borivali East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400066 Ph: 022-28635361 Mob. 9320022233 Email : umesh@tlounge.in



होली का त्योहार,
रंगों का त्योहार,
मिलकर मनाएं,
खुशियों का त्यौहार हम मिलकर
मनाएं होली का त्यौहार



Air Parcel Service LLP

Head Office: Office No-01, Laxmi Niketan Building,
1St Floor, 216 - Kalbadevi Road, Near Cotton Exchange,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400002
दूरध्वनि : 022-22400096, 22404337
अणुडाक : airparcelservices100@gmail.com

होली का त्योहार, रंगों का त्योहार, मिलकर मनाएं,
खुशियों का त्यौहार हम मिलकर मनाएं होली का त्यौहार



**RASHTRIYA METAL
INDUSTRIES LIMITED**

**THE TRUSTED NAME FOR
BRASS, PHOSPHOR BRONZE,
COPPER STRIPS AND FOILS**

REGD.OFFICE
308-312, MEADOWS, SAHAR PLAZA COMPLEX, SIR M.V ROAD,
J.B. NAGAR, ANDHERI (EAST), MUMBAI- 400 059 INDIA
TEL.:+91 22 62783000/ 28323311
e-mail: sales@rashtriyametal.com
website: http://www.rashtriyametal.com

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



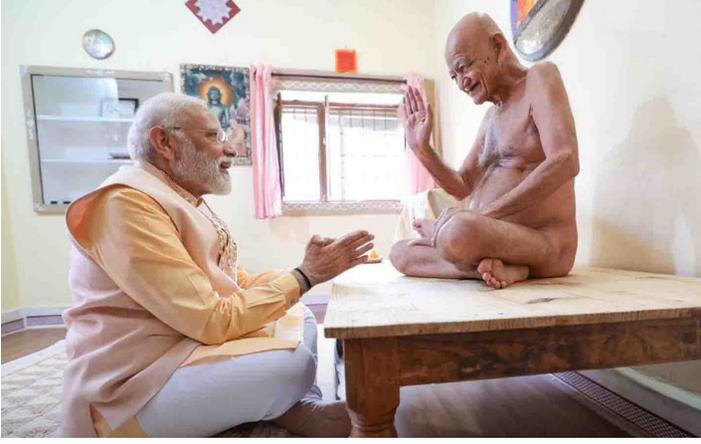
पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

39

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज हमेशा स्वच्छ और स्वस्थ राजनीति के पैरोकार रहे लोकनीति लोभसंग्रह नहीं, लोकसंग्रह के लिए- नरेंद्र मोदी प्रधान मंत्री, भारत गणराज्य



जीवन में हम बहुत कम ऐसे लोगों से मिलते हैं, जिनके निकट जाते ही मन-मस्तिष्क एक सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है, ऐसे व्यक्तियों का स्नेह, उनका आशीर्वाद, हम सबके लिए बहुत बड़ी पूंजी होती है। संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज हमारे लिए ऐसे ही थे। उनके समीप अलौकिक आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता था। आचार्य विद्यासागर जी जैसे संतों को देखकर ये अनुभव होता था कि कैसे भारत में आध्यात्म किसी अमर और अजस्र जलधारा के समान अखिल प्रवाहित होकर समाज का मंगल करता रहता है। आचार्य जी से मिली प्रेरणा। आज मुझे उनसे हुई मुलाकातें, उनसे हुआ संवाद, सब बार-बार याद आ रहा है। पिछले साल नवंबर में छत्तीसगढ़ में डोंगरगढ़ के चंद्रगिरी जैन मंदिर में उनके दर्शन करने जाना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात थी, तब मुझे जरा भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि आचार्य जी से मेरी यह आखिरी मुलाकात होगी, वह पल मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया, इस दौरान उन्होंने काफी देर तक मुझे बातें कीं। उन्होंने पितातुल्य भाव से मेरा ख्याल रखा और देश सेवा में किए जा रहे प्रयासों के लिए मुझे आशीर्वाद भी दिया। देश के विकास और विश्व मंच पर 'भारत' को मिल रहे सम्मान पर उन्होंने प्रसन्नता भी व्यक्त की थी। अपने कार्यों की चर्चा करते हुए वह काफी उत्साहित थे, इस दौरान उनकी सौम्य दृष्टि और दिव्य मुस्कान प्रेरित करने वाली थी, उनका आशीर्वाद आनंद से भर देने वाला था, जो हमारे अंतर्मन के साथ-साथ पूरे वातावरण में उनकी दिव्य उपस्थिति का अहसास करा रहा था, उनका जाना उस अद्भुत मार्गदर्शक को खोने के समान है, जिन्होंने मेरा और अनगिनत लोगों का मार्ग निरंतर प्रशस्त किया।

भारतवर्ष की ये विशेषता रही है कि यहां की पावन धरती ने निरंतर ऐसी महान विभूतियों को जन्म दिया, जिन्होंने लोगों को दिशा दिखाने के साथ-साथ समाज को भी बेहतर बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संतों और समाज सुधार की इसी महान परंपरा में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का प्रमुख स्थान है, उन्होंने वर्तमान के साथ ही भविष्य के लिए भी एक नई राह दिखाई है।

उनका संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक प्रेरणा से भरा रहा, उनके जीवन का हर अध्याय, अद्भुत ज्ञान, असीम करुणा और मानवता के उत्थान के लिए अटूट प्रतिबद्धता से सुशोभित है।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र की त्रिवेणी थे, उनके व्यक्तित्व की सबसे विशेष बात ये थी कि उनका सम्यक दर्शन जितना आत्मबोध के लिए था, उतना ही सशक्त उनका लोक बोध भी था। उनका सम्यक ज्ञान जितना धर्म को लेकर था, उतना ही उनका चिंतन लोक विज्ञान के लिए भी रहता था।

करुणा, सेवा और तपस्या से परिपूर्ण आचार्य जी का जीवन तीर्थंकर महावीर के आदर्शों का प्रतीक रहा, उनका जीवन, जैन धर्म की मूल भावना का सबसे बड़ा उदाहरण रहा, उन्होंने जीवन भर अपने काम और अपनी दीक्षा से इन सिद्धांतों का संरक्षण किया। हर व्यक्ति के लिए उनका प्रेम यह बताता है कि जैन धर्म में 'जीवन' का महत्व क्या है, उन्होंने सत्यनिष्ठा के साथ अपनी पूरी आयु तक ये सीख दी कि विचारों, शब्दों और कर्मों की पवित्रता कितनी बड़ी होती है, उन्होंने हमेशा जीवन के सरल होने पर जोर दिया, आचार्य श्री जैसे व्यक्तित्वों के कारण ही आज पूरी दुनिया को जैन धर्म और तीर्थंकर महावीर के जीवन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

आचार्य श्री जैन समुदाय के साथ ही अन्य विभिन्न समुदायों के भी बड़े प्रेरणास्रोत रहे। विभिन्न पंथों, परंपराओं और क्षेत्रों के लोगों को उनका सानिध्य मिला, विशेष रूप से युवाओं में आध्यात्मिक जागृति के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया।

शिक्षा का क्षेत्र उनके हृदय के बहुत करीब रहा। बचपन में सामान्य विद्याधर से लेकर आचार्य विद्यासागर जी बनने तक की उनकी यात्रा ज्ञान प्राप्ति और उस ज्ञान से पूरे समाज को प्रकाशित करने की उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दिखाती है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही एक न्यायपूर्ण और प्रबुद्ध समाज का आधार है, उन्होंने लोगों को सशक्त बनाने और जीवन के लक्ष्यों को पाने के लिए ज्ञान को सर्वोपरि बताया। सच्चे ज्ञान के मार्ग के रूप में स्वाध्याय और आत्म-जागरूकता के महत्व पर उनका विशेष जोर था, इसके साथ ही उन्होंने अपने अनुयायियों से निरंतर सीखने और आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर प्रयास करने का भी आग्रह किया था।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज की इच्छा थी कि हमारे युवाओं को ऐसी शिक्षा मिले, जो हमारे सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित हो, वह अक्सर कहा करते थे कि चूंकि हम अपने अतीत के ज्ञान से दूर हो गए हैं, इसलिए वर्तमान में हम अनेक बड़ी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। अतीत के ज्ञान में वो आज की अनेक चुनौतियों का समाधान देखते थे, जैसे जल संकट को लेकर वो 'भारत' के प्राचीन ज्ञान से अनेक समाधान सुझाते थे, उनका यह भी विश्वास था कि शिक्षा वही है, जो स्किल डवलपमेंट और इनोवेशन पर अपना ध्यान केंद्रित करे। आचार्य श्री ने कैदियों की भलाई के लिए भी विभिन्न जेलों में काफी कार्य किया, कितने ही कैदियों ने आचार्य श्री के सहयोग से हथकरघा का प्रशिक्षण लिया। कैदियों में उनका इतना सम्मान था कि कई कैदी रिहाई के बाद अपने परिवार से भी पहले आचार्य विद्यासागर जी से मिलने जाते थे।

संत शिरोमणि आचार्य श्री को भारत देश की भाषायी विविधता पर बहुत गर्व था, इसलिए वह हमेशा युवाओं को स्थानीय भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित करते थे, उन्होंने स्वयं भी संस्कृत, प्राकृत और हिंदी में कई सारी रचनाएं कीं। एक संत के रूप में वे शिखर तक पहुंचने के बाद भी जिस प्रकार जमीन से जुड़े रहे, ये उनकी महान रचना 'मूक माटी' में स्पष्ट **शेष पृष्ठ ३३ पर...**

पृष्ठ ३२ से... रूप से दिखाई पड़ती है, इतना ही नहीं, वे अपने कार्यों से वंचितों की आवाज भी बने।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी के योगदान से स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी बड़े परिवर्तन हुए हैं। उन्होंने उन क्षेत्रों में विशेष प्रयास किया, जहां उन्हें ज्यादा कमी दिखाई पड़ी। स्वास्थ्य को लेकर उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिक चेतना के साथ जोड़ने पर बल दिया, ताकि लोग शारीरिक और मानसिक रूप, दोनों से स्वस्थ रह सकें। मैं विशेष रूप से आने वाली पीढ़ियों से यह आग्रह करूंगा कि वे राष्ट्र निर्माण के प्रति संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रतिबद्धता के बारे में व्यापक अध्ययन करें। वे हमेशा लोगों से किसी भी पक्षपातपूर्ण विचार से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया करते थे। वे मतदान के प्रबल समर्थकों में से एक थे और मानते थे कि यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है। उन्होंने हमेशा स्वस्थ और स्वच्छ राजनीति की पैरवी की। उनका कहना था- 'लोकनीति लोभसंग्रह नहीं, बल्कि लोकसंग्रह है', इसलिए नीतियों का निर्माण निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि लोगों के कल्याण के लिए होना चाहिए।

आचार्य श्री का गहरा विश्वास था कि एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिकों के कर्तव्य भाव के साथ ही अपने परिवार, अपने समाज और देश के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की नींव पर होता है, उन्होंने लोगों को सदैव ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया, ये गुण ही न्यायपूर्ण, करुणामयी और समृद्ध समाज के लिए आवश्यक हैं। आज जब हम विकसित भारत के निर्माण की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं कर्तव्यों की भावना और ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है।

ऐसे कालखंड में जब दुनियाभर में पर्यावरण पर कई तरह के संकट मंडरा रहे हैं, तब संत शिरोमणि आचार्य श्री का मार्गदर्शन हमारे बहुत काम आने वाला है, उन्होंने एक ऐसी जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया, जो प्रकृति को होने वाले नुकसान को कम करने में सहायक हो, यही तो 'मिशन लाइफ' है जिसका आह्वान आज भारत ने वैश्विक मंच पर किया है, इसी तरह उन्होंने हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि को सर्वोच्च महत्व दिया, उन्होंने कृषि में आधुनिक टेक्नोलॉजी अपनाने पर भी बल दिया, मुझे विश्वास है कि वो नमो ड्रोन दीदी

अभियान की सफलता से बहुत खुश हुए।

संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज जी, देशवासियों के हृदय और मन-मस्तिष्क में सदैव जीवंत रहेंगे, आचार्य श्री के संदेश उन्हें सदैव प्रेरित और आलोकित करते रहेंगे, उनकी अविस्मरणीय स्मृति का सम्मान करते हुए हम उनके मूल्यों को मूर्त रूप देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह ना सिर्फ उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि होगी, बल्कि उनके बताए रास्ते पर चलकर राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त होगा। जय भारत!

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार होली पर हार्दिक शुभकामनाएं

With Best Compliments from

Amrit Papers Private Limited

264, Shreenagar Extension, Indore - 452018

Ph. : +91 731 4860900

Email : info@amritpapers.com

Authorised Whole Sellers :

- The West Coast Paper Mills Ltd., Dandeli (U.K.)
- Tamil Nadu Newsprint & Papers Ltd., Chennai
- Century Pulp & Paper, Lalkua
- Bilt Graphic Paper Products Ltd., Mumbai
- Shah Paper Mills Ltd., Vapi
- Satia Industries Ltd., Muksar
- Kuantum Papers Ltd., Chandigarh
- Shreyans Industries Ltd., New Delhi
- Khanna Paper Mills Ltd., Amritsar
- Chadha Papers Ltd., Noida

Associate Concern :

- Shivganga Drillers Pvt. Ltd.
- Mosaic Workskills Pvt. Ltd.
- Aditi Enterprises Pvt. Ltd.

Guruji®

होली आई रे कन्हाई
धियो केशरिया ठण्डाई

AVAILABLE IN ALL LEADING STORES

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

33

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

८ मार्च



नारियों में अपरिमित शक्ति और क्षमताएँ विद्यमान हैं। व्यावहारिक जगत के सभी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किये हैं। अपने अदभुत साहस, अथक परिश्रम तथा दूरदर्शी बुद्धिमत्ता के आधार पर विश्वपटल पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहीं हैं। मानवीय संवेदना, करुणा, वात्सल्य जैसे भावों से परिपूर्ण अनेक नारियों ने युग निर्माण में अपना योगदान दिया है, ऐसी ही महान नारियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास 'मेरा राजस्थान' परिवार कर रहा है:

एक ऐसा क्षेत्र, जहां महिलाएं सशक्तिकरण की राह पर हैं और अपने पक्ष की मजबूत दावेदारी दिखा रही हैं। यह क्षेत्र है देश की सुरक्षा। देश की सुरक्षा सबसे अहम होती है, तो इस क्षेत्र में आखिर महिलाओं की भागीदारी को कम क्यों आंका जाए? देश की मिसाइल सुरक्षा की कड़ी में ५००० किलोमीटर की मारक क्षमता वाली अग्नि-५ मिसाइल की जिस महिला ने सफल परीक्षण कर पूरे विश्व मानचित्र पर भारत का नाम रौशन किया है, वह शखिसयत है टेसी थॉमस। डॉ. टेसी थॉमस को कुछ लोग 'मिसाइल वूमन' कहते हैं, तो कई उन्हें 'अग्नि-पुत्री' का खिताब देते हैं। पिछले २० सालों से टेसी थॉमस इस क्षेत्र में मजबूती से जुड़ी हुई हैं। टेसी थॉमस पहली भारतीय महिला हैं जो देश की मिसाइल प्रोजेक्ट को संभाल रही हैं। टेसी थॉमस ने इस कामयाबी को यूं ही नहीं हासिल किया, बल्कि इसके लिए उन्होंने जीवन में कई उतार-चढ़ाव का सामना भी करना पड़ा। आमतौर पर रणनीतिक हथियारों और परमाणु क्षमता वाले मिसाइल के क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व रहा है, इस धारणा को तोड़कर डॉ. टेसी थॉमस ने सच कर दिखाया कि कुछ उड़ान हौसले के पंखों से भी उड़ी जाती है। डॉ. किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा की प्रथम वरिष्ठ महिला अधिकारी हैं, आपने विभिन्न पदों पर रहते हुए अपनी कार्य-कुशलता का परिचय दिया है। आप संयुक्त आयुक्त पुलिस प्रशिक्षण तथा दिल्ली पुलिस स्पेशल आयुक्त (रबुफिया) के पद पर कार्य कर चुकी हैं। आपके मानवीय एवं निडर दृष्टिकोण ने पुलिस कार्यप्रणाली एवं जेल सुधारों के लिए अनेक आधुनिक आयाम जुटाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। निःस्वार्थ कर्तव्यपरायणता के लिए उन्हें शौर्य पुरस्कार मिलने के अलावा आपके अनेक कार्यों को दुनिया में मान्यता मिली है, जिसके परिणामस्वरूप एशिया का नोबल पुरस्कार कहा जाने वाला रमन मैगसेसे पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया। व्यावसायिक योगदान के अलावा आपके द्वारा दो स्वयं सेवी संस्थाओं की स्थापना तथा पर्यवेक्षण किया जा रहा है

ये संस्थाएं हैं- १९८८ में स्थापित नव ज्योति एवं १९९४ में स्थापित इंडिया विजन फाउंडेशन, ये संस्थाएं रोजाना हजारों गरीब बेसहारा बच्चों तक पहुँचकर प्राथमिक शिक्षा तथा स्त्रियों को प्रौढ़ शिक्षा उपलब्ध कराती है। 'नव ज्योति संस्था' नशामुक्ति के लिए इलाज करने के साथ-साथ झुग्गी बस्तियों, ग्रामीण क्षेत्रों में तथा जेल के अंदर महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण और परामर्श भी उपलब्ध कराती है। डॉ. बेदी तथा उनकी संस्थाओं को आज अंतर्राष्ट्रीय पहचान प्राप्त है। नशे की रोकथाम के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया गया 'सर्ज साटिरोफ मेमोरियल अवार्ड' ताजा प्रमाण है। खेल जगत में भी महिलाएं सफलता पूर्वक अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं।

भारतीय ट्रैक एण्ड फ़ील्ड की रानी माने जानी वाली पी. टी. उषा भारतीय खेलकूद में १९७९ से हैं। आप भारत के अब तक के सबसे अच्छे खिलाड़ियों में से हैं। आपको

'पय्योली एक्सप्रेस' नामक उपनाम दिया गया था। १९८३ में सियोल में हुए दसवें एशियाई खेलों में दौड़ कूद में पी.टी. उषा ने ४ स्वर्ण व १ रजत पदक जीत आपने जितनी भी दौड़ों में हिस्सा लीं, सबमें नए एशियाई खेल कीर्तिमान स्थापित किए। १९८५ में जकार्ता में हुई एशियाई दौड़-कूद प्रतियोगिता में पाँच स्वर्ण पदक जीते, एक ही अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में छः स्वर्ण जीतना भी एक कीर्तिमान है। ऊषा ने अब तक १०१ अंतर्राष्ट्रीय पदक जीते हैं, आप दक्षिण रेलवे में अधिकारी पद पर कार्यरत हैं। १९८५ में आपको पद्मश्री व अर्जुन पुरस्कार दिया गया।

एक भारतीय महिला मुक्केबाज हैं, 'मैरी कॉम' पांच बार विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता की विजेता रह चुकी हैं। दो वर्ष के अध्ययन प्रोत्साहन अवकाश के बाद आपने वापसी कर लगातार चौथी बार विश्व गैर-व्यावसायिक बॉक्सिंग में स्वर्ण पदक जीता, आपकी इस उपलब्धि से प्रभावित होकर एआइबीए ने आपको मेन्त्रीफिसेंट मैरी (प्रतापी मैरी) का संबोधन दिया। २०१२ के लंदन ओलम्पिक में महिला मुक्केबाजी में भारत की तरफ से आप एकमात्र महिला थीं। मैरी कॉम ने सन् २००१ में प्रथम बार नेशनल वुमन्स बॉक्सिंग चैंपियनशिप जीती, अब तक छह राष्ट्रीय खिताब जीत चुकी हैं। बॉक्सिंग में देश का नाम रौशन करने के लिए भारत सरकार ने वर्ष २००३ में आपको अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया एवं वर्ष २००६ में पद्मश्री से सम्मानित किया। जुलाई २९, २००९ को आप भारत के सर्वोच्च खेल सम्मान राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार के लिए (मुक्केबाज विजेन्द्र कुमार तथा पहलवान सुशील कुमार के साथ) चुनीं गयीं।

सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा जैसी कई महिलाएं खेल जगत की गौरवपूर्ण पहचान हैं।

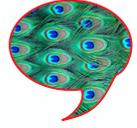
१९८४ को बछेन्त्री पाल दुनिया की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट को फतह करने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

मेरी क्युरी विख्यात भौतिकविद और रसायनशास्त्री थी, मेरी ने रेडियम की खोज की थी। विज्ञान की दो शाखाओं (भौतिकी एवं रसायन विज्ञान) में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने वाली आप पहली वैज्ञानिक हैं। वैज्ञानिक मां की दोनों बेटियों ने भी नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया। बड़ी बेटि आइरीन को १९३५ में रसायन विज्ञान में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ तो छोटी बेटि ईव को १९६५ में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार मिला।





भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे जय भारत! आपणों राजस्थान



Remove INDIA Name From The Constitution

अशोक जी 'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि फाल्गुन माह में रंगों का त्यौहार 'होली' का महत्त्व इसलिए विशेष रूप से है क्योंकि यह त्यौहार संदेश देता है कि होलिका दहन से बुराइयों का अंत होकर अच्छाईयों का प्रारंभ होता है। भगवान विष्णु के भक्त प्रह्लाद का असुर राजा हिरण्यकश्यप के आदेशानुसार उनकी बहन होलिका द्वारा छल से मारने का प्रयास विफल होता है और वरदान प्राप्त होलिका स्वयं भक्त प्रह्लाद के स्थान पर आग की लपटों में जल कर मर जाती है। इस पर्व का पौराणिक और धार्मिक महत्त्व आज भी है, 'होली' खेलने के एक दिन पूर्व होलिका दहन आयोजन किया जाता है। रांची में मारवाड़ी समाज द्वारा दो प्रमुख स्थानों में नगरवासियों के लिए होलिका दहन का कार्यक्रम पुरे रीति रिवाज से आयोजित किया जाता है और होली वाले दिन पुरे समाज के लिए होली मिलन समारोह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें सभी आयु वर्ग की महिलाओं एवं पुरुषों की सहभागिता रहती है, इसमें राजस्थानी संस्कृति और कला का शानदार कार्यक्रम सह-भोज के साथ आयोजित किया जाता है, जिसका आनंद सम्पूर्ण समाज उठाता है। भारत के हर राज्य में यह पर्व अलग-अलग रीति-रिवाज से मनाया जाता है, यह पर्व सभी के जीवन में खुशियों का रंग भर दे यही मंगल कामना है।

आज की युवा पीढ़ी भी अपने धर्म और संस्कृति से जुड़ी रहे, इसकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी अभिभावकों की है, यदि अभिभावक बचपन से ही युवाओं को अपने धर्म और समाज से जोड़े तो युवावस्था में भी युवा वर्ग किसी न किसी रूप में अपने धर्म और संस्कृति से जुड़े रहेंगे। भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाये इस संदर्भ में अशोक जी का कहना है कि अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

अशोक जी मूलतः राजस्थान के चुरू जिले में स्थित 'नारसरा' के निवासी हैं। आपका जन्म झारखण्ड के 'गुमला' जिले में और पूर्ण शिक्षा 'रांची' में संपन्न हुई है। आप विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। आप अग्रवाल सभा, मारवाड़ी सहायक समिति के पूर्व अध्यक्ष हैं। वर्तमान में कवि सम्मलेन आयोजन समिति के अध्यक्ष और झारखण्ड सरकार द्वारा आपको जगन्नाथपुर मंदिर न्यास समिति का उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत किया है, इसके अलावा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सहित कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। जय राष्ट्रीय संप्रभुता! जय भारत!

अशोक नारसरिया

पूर्व अध्यक्ष मारवाड़ी सहायक समिति रांची

नारसरा निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३११०४३०९



सुरेश तुलस्यान

अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन डाल्टनगंज

झुंझुनू निवासी-झारखंड प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९५७२३७७८५६



भवन में 'होली स्नेह मिलन समारोह' कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने में ही रहने लगी है उनके भीतर समाज के प्रति उदासीनता निर्माण हो रही है, वह अपने जीवन शैली में ही इतना व्यस्त है कि उन्हें किसी से कोई मतलब नहीं है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही सुंदर अभियान है और यह होना ही चाहिए, अपने देश को हर भाषा में एक ही नाम से पुकारा जाना चाहिए, हमारी पहचान प्राचीन काल से 'भारत' नाम से ही थी, भारत ही रहेगी, इंडिया नाम तो अंग्रेजों ने थोप दिया, जिसका कोई अर्थ नहीं, हम भारतवासी हैं और 'भारत' नाम ही हमारी पहचान है।

सुरेश जी मूलतः राजस्थान के 'झुंझुनू' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा झारखंड के 'डाल्टनगंज' में संपन्न हुयी है, यहां फर्नीचर शोरूम और मैन्युफैक्चर के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। राणी सती मंदिर और मारवाड़ी सम्मेलन डाल्टनगंज के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, डाल्टनगंज में स्थित मारवाड़ी सार्वजनिक हिंदी पुस्तकालय सबसे पुरानी संस्था है, इस संस्था के सचिव पद पर सक्रिय हैं, इसके जीर्णोद्धार की पूरी जिम्मेदारी आपके द्वारा संपन्न की गई है, जिसमें समाज की भी अहम भूमिका रही, इसके अलावा अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लुगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

36



सुभाष अग्रवाल

उपाध्यक्ष उत्कल प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन राजगंगपुर उड़ीसा
झुंझुनू निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०८३३९६

सुभाष जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' रंगों का त्यौहार है, आपसी मिलन और सौहार्द का त्यौहार है 'होली', 'होली' एक दूसरे से मिलने का अवसर प्रदान करता है, जिससे प्रेम व्यवहार बढ़े। हमारे यहां अग्रवाल परिवार द्वारा 'होली' मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसके अंतर्गत धार्मिक और सांस्कृतिक प्रोग्राम आयोजित किए जाते हैं, सभी समाज के लोग इसमें

बड़े ही उत्साह से सम्मिलित होते हैं। मारवाड़ी युवा मंच, महिला मंच द्वारा विभिन्न प्रोग्राम किए जाते हैं। राणी सती दादी का मंगल पाठ आयोजित किया जाता है, विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, जिससे एक अलग उत्साह और उमंग का वातावरण समाज में निर्माण होता है, इसीलिए 'होली' का पर्व हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म, समाज और त्योहार से थोड़ा दूर ही रहते हैं वह अपने ही में मस्त रहने वाले हैं और आधुनिक यंत्रों से घिरे हुए हैं, उन्हें समाज से जोड़ने का कार्य किया जाना चाहिए।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि प्राचीन काल से हमारे देश का नाम भारत या आर्यावर्त था, हमारी पहचान हमेशा से 'भारत' नाम से ही थी, 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए, इस अभियान का मैं महत्वपूर्ण समर्थन करता हूं।

सुभाष जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'गुणागौडजी' के निवासी हैं। आपका जन्म राजस्थान में और संपूर्ण शिक्षा 'उड़ीसा' में संपन्न हुई है, १९७२ से आप 'उड़ीसा' में बसे हुए हैं और एलपीजी सिलेंडर के व्यवसाय में संलग्न हैं। विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्य से जुड़े हैं। 'राजगंगपुर' उड़ीसा मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, विकास परिषद द्वारा संचालित गौशाला, धर्मशाला और मुक्तिधाम से भी जुड़े हैं, एकल विद्यालय अभियान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी जुड़े हैं, अन्य कई संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

पवन जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि होली का यह पवित्र पर्व संपूर्ण हिन्दू समाज के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसका धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व आज भी बना हुआ है, हमारे यहाँ संपूर्ण मारवाड़ी समाज जिसमें अग्रवाल, महेश्वरी, ब्राह्मण सभी मिलाकर २०० परिवार हैं, सभी मिलकर 'होली' मिलन कार्यक्रम सत्यनारायण पंचायती मंदिर में बड़े धूमधाम से आयोजित करते हैं। अपने धर्म और संस्कृति से जुड़े रहने के लिए पर्व ही हमारे लिए सबसे बड़े सहायक हैं, इसीलिए यह पर्व हमारे जीवन में महत्वपूर्ण योगदान रखते हैं।

पवन कुमार भूत

अध्यक्ष उत्कल प्रदेशिक मारवाड़ी सम्मेलन रायरंगपुर उड़ीसा
झुंझुनू निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७००८५३९४०७



आज की युवा पीढ़ी भी धर्म और समाज से जुड़े रहने से उनका अलग ही उत्साह देखने को मिलता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

पवन जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'डुंडलोद' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'रायरंगपुर' उड़ीसा में संपन्न हुयी है, यहां आप कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं तथा विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। वर्तमान में उत्कल प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन रायरंगपुर शाखा के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। आप सबका साथ-सबका विकास हो इस सोच को प्रधानता देते हैं। जय भारत!



दीपक अग्रवाल

अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन सुंदरगढ़ शाखा
हरियाणा निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०४७६९६

दीपक जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं की 'होली' भारत का महापर्व है, यह पूरे भारत में बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, इस त्यौहार के अवसर पर लोग आपसी बैर भाव को भूलाकर एक दूसरे को रंग लगाते हैं जिससे आपसी प्रेम व्यवहार बढ़े।

सुंदरगढ़ में संपूर्ण मारवाड़ी समाज एक स्थान पर मिलते हैं, होलिका दहन करते हैं और दूसरे दिन रंगों का त्यौहार 'होली' खेला जाती है, एक दूसरे को

गुलाल लगाते हैं, इस तरह समाज में एक हर्षोल्लास का वातावरण बन जाता है। चारों ओर खुशी ही नजर आती है, यह

खुशी सभी के जीवन में रंगों की तरह रंग जाए यही शुभकामना करता हूं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं, हम भारतीय हैं और हमारे देश का नाम 'भारत' ही है।

दीपक जी मूलतः 'हरियाणा' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा उड़ीसा के 'सुंदरगढ़' में संपन्न हुई है, यहां आप आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन सुंदरगढ़ शाखा के अध्यक्ष हैं, इसके अलावा श्याम सखा मंडल व प्रणामी संस्था के भी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों में भी यथासंभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

कैलाश जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' का पर्व आपसी सामंजस्य का पर्व है, मेल मिलाप का पर्व है, जिसमें समाज के लोग एक दूसरे से हुए बैर भाव को भूलाकर अबीर गुलाल लगाकर एक दूसरे का सम्मान करते हैं और परस्पर सामंजस्य स्थापित करते हैं, आज जहां परिवार के लोगों के बीच सामंजस्य नहीं है तो सामाजिक में सामंजस्य कैसे स्थापित हो सकता है। 'होली' का पर्व इस सामंजस्य को बढ़ाने का कार्य करता है, इसीलिए 'होली' पर्व हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहां समाज के लगभग ६०० परिवार निवास करते हैं और तीन मंजिला सामाजिक भवन का निर्माण किया गया है, जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है, समाज द्वारा 'होली मिलन समारोह' का भव्य कार्यक्रम भी किया जाता है। 'दुमका' में होली बड़े ही धूमधाम से मनाई जाती है, जिसमें समाज के सभी लोग सम्मिलित होते हैं एक स्थान निर्धारित किया जाता है, जहां पर समाज के सभी लोग 'होलिका दहन' के लिए उपले इकट्ठा करते हैं, 'होलिका' की पूजा की जाती है और दूसरे दिन रंग उत्सव खेला जाता है, अबीर गुलाल लगाकर शांति और सौहार्द के साथ 'होली' मनाई जाती है। महिलाएं भी बड़े उत्साह के साथ इस पर्व को मनाती हैं। युवा वर्ग भी बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ इस पर्व को मनाते हैं, इस दौरान समाज द्वारा विभिन्न आयोजन किया जाता है। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

कैलाश जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'सिंधाना' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'दुमका' झारखंड में संपन्न हुई है, यहां आप बैंक से सेवानिवृत्त हुए हैं, विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। दुमका मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, बाबा बैद्यनाथ धाम व बासुकीनाथ रास्ते में स्थित 'सहारा' नामक स्थान पर स्थापित 'बोल बम सेवा समिति' के कोषाध्यक्ष हैं, यह संस्था श्रद्धालुओं के लिए कैंप आयोजित करती है, जिसमें निःशुल्क भोजन, पानी रहने और औषधि की व्यवस्था की जाती है और भी कई संस्थानों से आप जुड़े हुए हैं। जय भारत!

कैलाश प्रसाद वर्मा

अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन दुमका

सिंधाना निवासी-दुमका प्रवासी

ध्रमणध्वनि: ७९०९०४५७०७



रमेश अग्रवाल (रम्भू)

सचिव मारवाड़ी सम्मेलन खरियार रोड शाखा

भिवानी निवासी-उड़ीसा प्रवासी

ध्रमणध्वनि: ९४३७३२८०५२

पर्व अपनी धार्मिक विशेषताओं के लिए भी जाना जाता है, चुकी मौसम में बसंत के आगमन से मौसम खुशनुमा हो जाता है। आम के पेड़ व बौर लगते हैं, वही वे सारे रंग बिरंगे फूल, जो ठंड की वजह से नहीं खिल पा रहे थे, वे खिलकर प्रकृति को रंग-बिरंगा कर देते हैं। उन्हीं रंगों की मस्ती में खो कर हम रंगों का त्यौहार 'होली' मनाते हैं। अपने अंदर की बुराइयों व अहंकार को 'होलिका' के रूप में जला कर अपने और अनमने रिश्तों को रंग लगा कर प्रेम बांटते हैं, इसीलिए 'होलिका' का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है।

आज की युवा पीढ़ी को अपने धर्म और समाज से जोड़े रखने की आवश्यकता है, उन्हें अपने पारंपरिक त्योहार और रीति रिवाज को बताना चाहिए, जिससे उनके मन में एक नई ऊर्जा बने और वह दुगुनी गति से कार्य कर सके, उन्हें त्यौहार के जीवन में क्या महत्व है और क्यों मनाना चाहिए, इसकी महत्वपूर्ण जानकारी देनी चाहिए, जिससे वे अपने धर्म और समाज से जुड़े रहें।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इच्छावाक्य वंश के राजा 'भरत' के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, अतः 'भारत' नाम सर्वदा उचित है।

रमेश जी मूलतः हरियाणा स्थित 'भिवानी' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा उड़ीसा के 'खरियार रोड' में संपन्न हुई है। यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, मारवाड़ी सम्मेलन खडियार रोड शाखा के सचिव पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। 'नवभारत' समाचार पत्र के जिला प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

रमेश जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि होली के अवसर पर समाज द्वारा विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। धुली वंदन के दिन संपूर्ण समाज इस त्यौहार को बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ मनाता है, तत्पश्चात स्नेह मिलन और प्रीतिभोज का आयोजन किया जाता है, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किए जाते हैं, पूरा माहोल खुशियों के रंग और अबीर गुलाल से रंग जाता है। 'होली' का

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका

'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार की तरफ से 'होली' के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए इंडिया नहीं



भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४

30



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए



अनिल कुमार अग्रवाल
अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन पाइकमाल
भिवानी निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९५८३३५३४३५

जाते हैं, यह पर्व पूरे भारत में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है और अलग-अलग नाम से भी जाना जाता है, यह पर्व सभी के जीवन में खुशियां लाए यही कामना करता हूं। आज की युवा पीढ़ी भी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है, उनमें तो रंगों को लेकर अलग ही उत्साह नजर आता है, उन्हें जोड़े रखना हमारा दायित्व है। 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि मैं १००% इस अभियान का समर्थन करता हूं कि अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। प्राचीन काल से हमारे देश की पहचान 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए। अनिल जी मूलतः हरियाणा के खटकड़ जिले में स्थित 'चरखी दादरी' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'पाइकमाल' उड़ीसा में संपन्न हुई है। यहां आप किरणा के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन 'पाइकमाल' के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अग्रवाल सभा से भी जुड़े हैं, अन्य कई संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

अनिल जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' पर्व रंगों का त्यौहार होने के साथ-साथ आपसी प्रेम एवं सौहार्द का त्यौहार है, इस दिन लोग आपसी इर्ष्या व गलतफहमियां भूलाकर एक दूसरे को गले लगाते हैं। वर्तमान परिपेक्ष में भी इसका महत्व उतना ही बना हुआ है, आज भी लोग इस पर्व को बड़े ही उमंग और हर्षोल्लास साथ मनाते हैं, चारों तरफ खुशियों के रंग बिखर जाते हैं, समाज द्वारा होली के अवसर पर विभिन्न आयोजन किए

महेंद्र जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' रंगों का त्यौहार है, पर्व के माध्यम से लोग, ईर्ष्या व द्वेष की भावना को होलिका के साथ दहन कर आपस के प्रेम व्यवहार को मजबूत करने का प्रयास करते हैं। आज की स्थिति में इस पर्व का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है, क्योंकि आज मनुष्य अपने जीवनचर्या में इतना व्यस्त है कि उसे अपने लिए ही समय नहीं मिलता, पर्व हमें एक दूसरे से मिलने का अवसर प्रदान करते हैं, आपसी सौहार्द की भावनाओं को बढ़ाने का मौका देते हैं, इसीलिए 'होली' का पर्व बहुत ही महत्वपूर्ण है, हमारे यहां बोकारो में सभी समाज द्वारा 'होली' पर्व मिलकर मनाया जाता है, सभी समाज एक जगह इकट्ठा होकर इस पर्व को मनाते हैं। समाज द्वारा विभिन्न संस्कृति, धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम किए जाते हैं। आज के युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है, बस उन्हें उचित मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं महत्वपूर्ण समर्थन करता हूं।

महेंद्र मोर
व्यवसायी व समाजसेवी
रतनगढ़ निवासी-बोकारो प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३९१८८९४५



महेंद्र जी मूलतः राजस्थान के चुरू जिले में स्थित 'रतनगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'पेटरवार-बोकारो' में ही संपन्न हुई है, यहां आप हार्डवेयर के कारोबार से जुड़े हैं साथ ही विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं, मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य हैं। जय भारत!



राजकुमार अग्रवाल
अध्यक्ष उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, सैतला शाखा
नीमकाथाना निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०३००८६

'होली' पर्व का हमारे जीवन में बहुत ही बड़ा महत्व है, हमारे 'सैतला' में 'होली' का पर्व सभी समाज द्वारा मिलकर मनाया जाता है, सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, महिलाओं द्वारा सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। युवाओं की भी भागीदारी बहुत बढ़-चढ़कर रहती है, मुख्य तो होली पर्व का वास्तविक आनंद तो युवा वर्ग ही उठाते हैं। आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी हुई है, बस उन्हें उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं। राजकुमार मूलतः राजस्थान स्थित 'नीमकाथाना' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'सैतला' उड़ीसा में संपन्न हुई है, यहां कंस्ट्रक्शन के कार्य से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यक्रम भी सक्रिय रहते हैं। उत्कल प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन सैतला शाखा के अध्यक्ष हैं, साथ ही लायंस क्लब के भी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

राजकुमार जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' रंगों का त्यौहार है, यह आपसी मिलन और भाईचारे का त्यौहार है, जिसमें सभी आपसी गिले-शिकवे भूलाकर एक दूसरे को रंगों में रंग देते हैं, इस त्यौहार से खुशियां छा जाती हैं। होली के अवसर पर जो परिवार दूर-दूर रहते हैं वह होली को मिलकर एक साथ मनाते हैं, जिससे हम अपनी संस्कृति और रीति-रिवाज से भी जुड़े रहें, इसलिए



दिनेश जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' हिंदू संस्कृति में बहुत सम्मान का पर्व है, 'होली' के दिन हम सभी अपने मन की कड़वाहट को दूर कर आपसी रिश्तों को सुधारते हैं। 'होली' पर्व का पौराणिक काल से ही महत्व रहा है, आज भी समाज द्वारा होली पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है और मनाया भी जाना चाहिए, जिससे हम अपनी संस्कृति और रीति रिवाज से जुड़े रहते हैं। त्यौहार ही हमें अपने संस्कारों और संस्कृति से जोड़े रखते हैं, इसीलिए पर्व मनाना जरूरी है। 'होली' का पर्व आपसी प्रेम व्यवहार को बढ़ाने का पर्व है, इस पर्व का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है, उन्हें जोड़े रखने की आवश्यकता भी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

दिनेश जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'फतेहपुर' शेखावाटी के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'तालचेर' में हुई है, यहां आप इंडस्ट्रियल आइटम के स्पलाई के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन 'तालचेर' के सचिव पद पर सक्रिय हैं, अग्रवाल सभा व राणी सती संस्था जैसी कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

दिनेश कुमार जालान

सचिव मारवाड़ी सम्मेलन तालचेर, उड़ीसा
फतेहपुर शेखावाटी निवासी-तालचेर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३७०४३५४४



ओम प्रकाश सोमानी
अध्यक्ष माहेश्वरी सभा बोकारो
रतनशहर निवासी-बोकारो प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९५४६८७६२७९

हम अपनी कला संस्कृति से भी जुड़े रहते हैं और युवाओं को भी से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं पर आज की युवा पीढ़ी अपने में ही मस्त रहती है, उन्हें अपने धर्म रीति रिवाज और संस्कृति दूर होते जा रहे हैं, उन्हें जोड़ने की आवश्यकता है और त्यौहार ही सबसे बड़ा माध्यम है, उन्हें जोड़ने के लिए।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान होनी चाहिए 'भारत'।

ओमप्रकाश जी मूलतः राजस्थान के 'झुंझुनू' जिले में स्थित इस्लामपुर के निवासी हैं। आपका जन्म रंगून में और सम्पूर्ण शिक्षा 'इस्लामपुर' में संपन्न हुई है। १९७८ से आप बोकारो झारखंड में बसे हुए हैं। आपका परिवार उसके पहले से बसा हुआ है, यहां आप टिंबर और प्लाईवुड के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी सभा 'बोकारो' के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। मारवाड़ी सम्मेलन के भी सदस्य हैं अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!

शिव कुमार मेहाडिया
अध्यक्ष जिला मारवाड़ी सम्मेलन, जामताड़ा झारखंड
मेहाडा निवासी-जामताड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९३४४१२४१२



शिवकुमार जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' का पर्व मन के मैल की होलिका जलाने का पर्व है, आपसी दुर्भावना, द्वेष और कटुता को समाप्त करने का पर्व है, यह पर्व समाज द्वारा बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है, इस पर्व का आज भी धार्मिक, आराध्यात्मिक महत्व बना हुआ है। हमारे यहां समाज द्वारा एक ही स्थान पर 'होलिका' दहन किया जाता है, तत्पश्चात दूसरे दिन रंगों का उत्सव मनाया जाता है, यह रंग यह हमारे जीवन में खुशियां भरते हैं, इसीलिए इस पर्व का हमारे जीवन में बहुत ही महत्व है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से काफी जुड़ी हुई है, धर्म के प्रति उनका उत्साह देखते ही बनता है, वे धर्म से जुड़ी विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के लिए आपका कहना है कि एक देश-एक नाम 'भारत' ही हमारे देश का वास्तविक नाम था और रहना चाहिए, इंडिया शब्द तो अंग्रेजी है जिसका कोई अर्थ नहीं।

शिवकुमार जी मूलतः राजस्थान के नीमकाथाना जिले में स्थित खेतड़ी तहसील के 'मेहाडा गांव' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा झारखंड के 'जामताड़ा' में संपन्न हुयी है। यहां आप कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, राणी सती दादी सेवा समिति में ट्रस्टी के पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए



प्रमोद कुमार सारस्वत
व्यवसायी व समाजसेवी
भिवानी निवासी-रांची प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३१३२५४३८

प्रमोद जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि युग-युगीन होली पर्व समता का त्योहार है, इस दिन निश्चय ही आपस की असमता रूपी असुरता का 'होली' में दाह करना चाहिए। यह पर्व जागरूकता और क्रियाशीलता का भी संदेश देता है, इस पर्व का संदेश है कि भीतरी और बाहरी गंदगी को ढूँढ-ढूँढकर साफ कर डालें और चतुर्मुखी पवित्रता की स्थापना करें। मानसिक, सामाजिक व राजनैतिक विकृत विकारों के कंटक को ढूँढ-ढूँढकर लावें और उसमें आग लगाकर उत्सव मनावें। होली मनाने का

यही सच्चा तरीका है, इसीलिए होली का पर्व हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

आज की युवा पीढ़ी धर्म और समाज के प्रति ज्यादा सजग नहीं, यह हमारे लिए अशुभ संकेत है, हमें हमेशा अपने धर्म के प्रति सजग होकर उसका निर्वाह और उसका पालन करना चाहिए। समाज को जोड़ने का कार्य सही तरीके से संपादित कर पाएं, बुजुर्गों और युवा पीढ़ी का आपसी सामंजस्य तालमेल बना रहना बहुत जरूरी है इसके लिए समस्या पर सामाजिक बैठकों में बुजुर्गों को युवा पीढ़ियों को ज़िम्मेदारी देकर कार्यक्रम को सफल बनाने में उनका भरपूर योगदान लेने का प्रयास करना चाहिए, तभी यह संभव होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' को सिर्फ 'भारत' ही बोला जाना चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो, इसे अन्य नाम से संबोधित करना उचित नहीं है। भारत और इंडिया इस वैचारिक मतभेदों का कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितिया थी, पर प्राचीन काल से हमारे देश का नाम 'भारत' था भारत ही रहना चाहिए।

प्रमोद जी मूलतः हरियाणा के भिवानी जिले में स्थित 'तिगडाना' गांव के निवासी हैं। आपका जन्म भागलपुर में संपूर्ण शिक्षा 'रांची' में संपन्न हुई है। यहां आप कपड़ा होलसेल के कारोबार व्यापार से जुड़े हैं। आप विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संस्थानों में विभिन्न पदों का दायित्व निर्वाह कर रहे हैं। झारखंड थोक वस्त्र विक्रेता संघ रांची के मानद सचिव, फेडरेशन झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, ESIC के सब कमिटी चेयरमैन, विप्र फाउंडेशन झारखंड ज़ोन- ६ के महामंत्री, परशुराम इंटरनेशनल झारखंड के प्रदेश अध्यक्ष, रांची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री के पद पर कार्यरत हैं अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

विनोद जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हमारे यहां समाज द्वारा 'महर्षि मेंही' विश्रामालय बनाया गया है। इसमें २२ कमरे एवं तीन हॉल बने हैं। इसी के एक हॉल में प्रतिवर्ष होली मिलन समारोह भव्य रूप से मनाया जाता है। इस आयोजन में मारवाड़ी युवा मंच भी भरपूर सहयोग करता है। होली मनाने का मुख्य उद्देश्य है समाज को संगठित करना। हमारे भीतर के ईर्ष्या और द्वेष के भाव रंगों में घुल जाएं और हमारा मन आनंदित एवं प्रफुल्लित हो जाये। इसीलिए होली पर्व का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है।

हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी धर्म और समाज से जुड़ी तो है, उसे केवल उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

विनोद जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नवलगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा बिहार 'सुल्तानगंज' में ही संपन्न हुई है। यहां आप ट्रेडिंग व्यवसाय से जुड़े हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। लायंस क्लब के अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सुल्तानगंज शाखा के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। अन्य संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए। जब विश्व के किसी भी देश का दो नाम नहीं है तो केवल भारत का ही दो नाम क्यों होना चाहिए। हमारे देश का भी एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'। हिंदी में भी 'भारत' और अंग्रेजी में भी BHARAT ही रहना चाहिए। जय भारत!

विनोद कुमार मुरारका

अध्यक्ष बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन सुल्तानगंज
नवलगढ़ निवासी-सुल्तानगंज प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८२१०१३९०८९



सुरेश कुमार उदयपुरी
प्रमंडलीय उपाध्यक्ष, झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन पलामु, झारखंड
दसरापुर निवासी-डालटनगंज, झारखंड प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३१५७७७२२

सुरेश जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि आज के परिवेश में 'होली' पर्व का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है, यह आपसी भाईचारे को बढ़ाता है, आपसी सामंजस्य का वातावरण निर्माण करता है, यदि 'होली' पर्व सादगी और अच्छी तरह से मनाई जाए तो ही इस पर्व का वास्तविक महत्व है, अबीर गुलाल एक दूसरे को लगाया जाए और शुभकामनाएं दी जाए तो ही इस पर्व का महत्व है।

हमारे यहां सभी मारवाड़ीयों द्वारा 'होली' पर्व मनाया जाता है, मिलन समारोह आयोजित किया जाता है, जिसमें समाज के

सभी वर्ग सम्मिलित होते हैं।

आज की युवा पीढ़ी का अपने धर्म और समाज के प्रति झुकाव बढ़ता जा रहा है, वे विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बड़-चढ़कर सहभागी होते हैं, हमारे यहां 'श्याम मित्र मंडल' जो युवाओं द्वारा संचालित है, श्याम बाबा जी का नया भव्य मंदिर बनवाया जा रहा है, राणी सती दादी **शेष पृष्ठ ४१ पर...**



पृष्ठ ४० से... का भव्य मंदिर पहले से ही बना हुआ है और भी विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यों में युवाओं का योगदान रहता है। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'। विश्व में किसी भी देश के तीन नाम नहीं है हमारे देश को हिंदुस्तान, भारत और इंडिया नाम से संबोधित किया जाता है पर हमारी पर वास्तविक पहचान 'भारत' नाम से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।
सुरेश जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'दसरापुर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'पलामू' झारखंड में संपन्न हुई है, पूर्व में आप बुलेट मोटरसाइकिल एजेंसी के कारोबार से जुड़े रहे, वर्तमान में विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। मारवाड़ी सम्मेलन जिला पलामू के प्रमंडलीय उपाध्यक्ष हैं, अग्रवाल सभा के कार्यकारी सदस्य हैं। मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित धर्मशाला के सचिव पद पर कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

**भारतीय संस्कृति का पावन पर्व होली पर
हार्दिक शुभकामनाएं**

Pawan Kumar Bhoot
Mob: 9437379784 / 7008539407

KUMAR TEXTILE

We Deals in: Suiting, Shirting, Saree, Bedsheets, Parda
& Many More

Retail Fixed Price Shop

Main Road, Rairanpur, MBJ, Odish, Bharat - 757043

**उल्लास, आनंद, उमंग और भाईचारे के
साथ जीवन व्यतीत करें**

होली पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Shiv Kumar Meharia
अध्यक्ष जिला मारवाड़ी सम्मेलन, जामताड़ा झारखंड
Mob: 9934412412

AJAY TEXTILES

Jamtara, Jharkhand, Bharat - 815351



Rajasthan Shree Award 2024
By Rajasthani Association Tamilnadu
To
Sri Gouri Shankar Rathi
Chennai



भारत को केवल **BHARAT** ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

मार्च २०२४



पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
Remove INDIA Name From The Constitution



नीम लगायें पर्यावरण बचायें
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

कल्याण में खुला बिट्स पिलानी का परिसर



मुंबई: इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए नामचीन बिट्स पिलानी का परिसर महामुंबई (एमएमआर) क्षेत्र के कल्याण में खुल गया है। शहाड- मुरबाड रोड

पर स्थित ६० एकड़ में फैले संस्थान के परिसर का उद्घाटन केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने किया। बिट्स पिलानी का यह पांचवां शैक्षणिक परिसर है, जिसमें कानून, प्रबंधन और डिजाइन आदि पाठ्यक्रमों की पढ़ाई होगी, परिसर की क्षमता ५००० विद्यार्थियों की है। बिट्स पिलानी का डिजाइन स्कूल पिछले सप्ताह ही शुरू किया गया था। कानून और प्रबंधन स्कूल पिछले साल से मुंबई के पर्वई में अस्थायी परिसर में काम कर रहे थे। वित्त मंत्री सीतारमण ने देश के विकास में बिट्स पिलानी के योगदान की सराहना की, उन्होंने कहा कि संस्थान बिट्स पिलानी के चांसलर कुमार मंगलम बिड़ला ने परिसर में प्रबंधन, डिजाइन, कानून आदि क्षेत्रों के लिए जो कि आज की जरूरत के मुताबिक प्रतिभाएं तराशेंगे। संस्थान के इस परिसर में उच्चस्तरीय सुविधाएं हैं। बिट्स पिलानी १९६४ में राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में बिड़ला के पैतृक गांव 'पिलानी' में शुरू हुआ था। पिलानी, गोवा, हैदराबाद, दुबई और कल्याण में इसके परिसर हैं।

खुद ऐसे घर पर बनाएं आयुर्वेदिक हल्दी कलर!!

हमारे जीवन में रंगों का अपना महत्व है, रंगीन मौसम, रंगीन मिजाज, सतरंगी छटा और न जाने कितनी ही उपमाओं से हमने अपने जीवन को रंगीन बनाया है। शायद होली के रंग भी कुछ ऐसा ही सन्देश देते हैं, होली पर रंगों का प्रयोग अक्सर होता है पर यदि इसमें कुछ संसोधन कर दिए जाएँ तो बात ही कुछ और हो जाये, हम आपको कुछ ऐसे ही देशी टिप्स बताते हैं, जो रंगों को और अधिक रंगीन तो बनायेंगे ही, साथ ही अच्छे स्वास्थ्य को भी बरकरार रखेंगे....



होली के कलर बनाने के हर्बल

मेहंदी के पाउडर को आटे के साथ मिला दें अब इसका रंग हरा हो जाएगा और जब आप इसे पानी में मिलायेंगे तो यह थोड़ा संतरे सा रंग ले लेगा और यदि इसमें सूखे गुलमोहर के पत्ते पीस कर मिला दीजिये तो यह हरा रंग छोड़ेगा।

दो चम्मच हल्दी का पाउडर लें और इसमें दुगुनी मात्रा में बेसन मिला दें, अब इसमें अमलतास या गेंदे के फूल को पीसकर मिला दें....इससे आपको पीला रंग मिलेगा।

लाल चन्दन में थोड़ा गुड़हल के फूलों को सुखाकर पीसकर मिला दें, हो गया लाल रंग तैयार। बेर के फूल को सुखाकर पीसकर पानी या आटा मिला दें, इससे आपको नीला रंग मिलेगा।

टेशू या पलाश के फूलों को सुखाकर पीसकर पानी में रात भर छोड़ दें या इसे पानी में उबाल दें इससे आपको केसरिया रंग मिलेगा। चुकंदर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर पानी में डूबा दें इसे यदि उबालेंगे तो आपको मेगनेटा कलर मिल जाएगा।

कथे के चूर्ण को पानी में मिलाकर आप भूरा रंग तैयार कर सकते हैं।

आंवले को सुखाकर पानी में भिंगोकर रातभर किसी बर्तन में छोड़ दें और अब इसे पानी में मिलाकर आप काला रंग तैयार कर सकते हैं, तो आप इन रंगों से वर्ष २०२४ की होली को मनाएं और भी अधिक रंगीन, जो रंग रखेंगे, आपके स्वास्थ्य का रखेगा बेहतर ख्याल....

माहेश्वरी
RANGE OF FOOD PRODUCTS

We are manufacturing the quality food products of....

Pickle's
Murabba's
Sauce
Syrup
Instant Mix

Mfg. by: SHRI GIRIRAJ TRADERS
Telipura, Siraspath, Unmired Road, Nagpur - 09.
E-mail: cpnagpur427@gmail.com
Customer Care: 9873170299

Size available in
100g / 200g / 300g / 500g / 1kg / 5kg / 15 kg



FOCE

TIMEPIECE

Love of origin....



TIMEPIECE



- AVAILABLE AT -



& ALL LEADING STORES IN MUMBAI

Trade Enquiries: +91 98200 53986.

Email : heightntrdg@hotmail.com

Website : www.foceindia.com

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2022-2024
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2022-24
License to post without prepayment'
Published on 28/02/2024 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.



ADD Gel

ACHIEVER[®]

THE WORLD'S FINEST GEL PEN



Non Dry

NOW...UPTO 2 YEARS



LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen. With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years. For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

**ONLY
₹ 50/-
PER PC**

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्ज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-2850 9999 अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in